Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 12 30 दिसम्बर, 2022 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

आरक्षण पर देश को फिर से सोचने की जरूरत, ये जरूरी है या नहीं

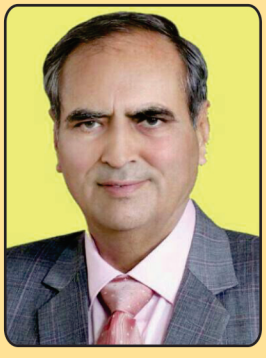

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

देश में आरक्षण एक ऐसा चर्चा का विषय बन गया जो इस नतीजे पर नहीं पहुंच सका कि आखिरकार आरक्षण की जरूरत कब तक है और इसके सही मायने क्या हैं? लेकिन पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर बात करना और उसको समझना बेहद जरूरी है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सामान्य वर्ग के गरीबों के लिए नौकरी और शिक्षा में 10 प्रतिशत आरक्षण बरकरार रखने पर अपनी मोहर लगाई है। अतः यह फैसला ऐतिहासिक है क्योंकि इसने इंदिरा साहनी केस में तय की गई आरक्षण की अधिकतम 50 प्रतिशत सीमा का बैरियर भी तोड़ दिया है।

सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने 3–2 के बहुमत से दिए अपने फैसले में आरक्षण पर एक नई लकीर खींच दी है। सुप्रीम कोर्ट ने अनारक्षित वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण का हक देने वाले 103वें संविधान संशोधन की संवैधानिक वैधता पर अपनी मोहर लगाई है। शीर्ष अदालत ने कहा कि 50 प्रतिशत आरक्षण की अधिकतम सीमा ऐसी नहीं है जिसका उल्लंघन न किया जा सके। सुप्रीम कोर्ट ने साथ में यह भी कहा कि आर्थिक आधार पर सकारात्मक कदम लंबे वक्त में आधारित आरक्षण को खत्म कर सकता है।

सीजेआई यूयू ललित, जस्टिस दिनेश माहेश्वरी, एस. रविंद्र भट, बेला एम. त्रिवेदी और जे बी पार्दीवाला की 5 सदस्यीय बेंच ने 3–2 के बहुमत से ईडब्लूएस आरक्षण की संवैधानिक वैधता पर मुहर लगाई थी। ईडब्लूएस आरक्षण के साथ केंद्रीय संस्थानों में आरक्षण की कुल सीमा 59.50 प्रतिशत पहुंच गई है। सुनवाई के दौरान केंद्र ने दलील भी दी थी कि अधिकतम आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा इतना भी जरूरी नहीं है कि उसका उल्लंघन ही न हो सके। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के आरक्षण पर दूरगामी असर होंगे।

निसंदेह स्वर्ण जातियों में भी आर्थिक तौर से कमजोर यानि गरीबों की सख्यां काफी अधिक है। यह भी तर्कशील है कि उच्च शिक्षा व रोजगार हासिल करने में भी परिवारिक हैसियत की बड़ी भूमिका होती है। आज हर परीक्षा के लिये अच्छी कोचिंग व टयूसन जरूरी है। जाति कोई भी हो अगर आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तो अच्छी पढ़ाई व कोचिंग नहीं पाने के कारण परीक्षा सफल करना बहुत कठिन है अतः अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग के इलावा स्वर्ण वर्ग के बच्चों के लिये अच्छी व्यवस्था आवश्यक है जिसके लिये आर्थिक आरक्षण चाहिये।

सरकार ने 2019 चुनाव से पहले 103वें संविधान संसोधन द्वारा सामान्य वर्ग के गरीब छात्रों के लिए 10 प्रतिशत अतिरिक्त आरक्षण की व्यवस्था की थी उस समय सभी पार्टियों ने इसका समर्थन किया था। श्री नरसिम्हा राव की कांग्रेस सरकार ने भी एसी ही व्यवस्था की थी जिसको सुप्रीम कोर्ट ने 1992 में खारिज कर दिया था लेकिन इस बार सुप्रीम कोर्ट की खण्ड पीढ़ ने इस पर मोहर लगाकर एतिहासिक फैसला किया है। अभी तक आरक्षण के बारे में यही दलील दी जा रही थी कि यह एक असाधारण औजार है जिसका उपयोग पीढ़ी दर पीढ़ी सैकड़ो सालों की वर्जनाओं और वचनाओं को काटने के लिये किया जाना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले और खासकर जस्टिस दिनेश माहेश्वरी की टिप्पणी के बाद आने वाले दिनों में आरक्षण के दायरे में कुछ अन्य नए वर्गों को लाने का रास्ता साफ हो सकता है। जस्टिस माहेश्वरी ने अपने फैंसलो में कहा कि आरक्षण गैरबराबरी को बराबरी पर लाने का लक्ष्य हासिल करने का एक औजार है। इसके लिए न सिर्फ सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग को समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जा सकता है बल्कि किसी और कमजोर क्लास को भी शामिल किया जा सकता है।

शेष पेज–2 पर

शुभ सूचना

1

मैं जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला की ओर से आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाओ सहित परमपिता परमेश्वर से आपके मंगलमय व सुखद भविष्य की कामना करता हूं। इसके साथ ही आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा द्वारा **29 जनवरी 2023 (रविवार) को प्रातः 11 बजे से 02 बजे** तक दीन बंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर 6, पंचकूला मे बंसतपंचमी के शुभ अवसर पर दीनबंधु सर छोटूराम की **142वीं जयन्ती** के उपलक्ष्य मे एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित किए जाने वाले समारोह में चौधरी रणजीत सिंह चौटाला, बिजली तथा जेल मंत्री मुख्य अतिथि होंगे जबकि हरियाणा की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती कमलेश ढ़ाण्डा अध्यक्षता करेंगी। अंबाला लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री रतनलाल कटारिया तथा राज्य सभा के सदस्य श्री कार्तिक शर्मा विशिष्ट अतिथि के तौर पर समारोह में शिरकत करेंगे। समारोह के दौरान सुरक्षा सैनिकों व युद्ध नायकों, मेधावी छात्रो, उत्कृष्ठ खिलाडियों, सरकारी, अर्ध–सरकारी सेवाओं से सेवा–निवृत होने वाले जाट सभा के आजीवन सदस्यों आदि को नकद पुरस्कार व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया जायेगा। जाट सभा के 80 वर्ष या इससे अधिक आयु के वरिष्ठ आजीवन सदस्यों को भी समारोह के दौरान सम्मानित किया जायेगा और ये आजीवन सदस्य अपना नाम व पूरा पता जाट भवन चंड़ीगढ़ कार्यालय में दिनांक 15.01.2023 तक भेजने की कृपा करें। इस अवसर पर हरियाणवी सांस्कृतिक प्रोग्राम श्रीमति प्रीति चौधरी द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। आप सभी से सादर निवेदन है कि समारोह मे परिवार सहित उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढ़ायें और इस भव्य समारोह के सफल आयोजन के लिये अपने सुझाव भी भेजने की कृपा करे।

–डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

शेष पेज–1

सुप्रीम कोर्ट पहले भी सरकार को आरक्षण के लिए समाज के अन्य कमजोर वर्गों की पहचान करने को कह चुका है। उदाहरण के तौर पर अप्रैल 2014 में किन्नरों को लेकर सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले को देखा जा सकता है। तब कोर्ट ने महिला, पुरुष से इतर लिंग की तीसरी श्रेणी ट्रांसजेंडर को मान्यता दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि किन्नरों को सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा समुदाय माना जाए और उन्हें नौकरी और शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षण दिया जाए। सितंबर 2018 में उत्तराखंड हाई कोर्ट ने भी राज्य सरकार को शिक्षण संस्थाओं और सरकारी नौकरी में किन्नर समुदाय को आरक्षण देने के लिए उचित नियम बनाने को कहा था। बिहार जैसे कुछ राज्य किन्नरों के लिए आरक्षण की व्यवस्था कर चुके हैं। बिहार सरकार ने पुलिस भर्ती में किन्नरों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की है।

इस फैसले के साथ ही ओबीसी आरक्षण पर भी नई सिरे से बहस और मांग जोर पकडेगी। आरजेडी, एसपी समेत कई क्षेत्रीय दल इसकी मांग करते रहे हैं। हरियाणा सहित कई राज्यों में बहुत बडे बडे आंदोलन इसको लेकर हो चुके हैं। अब अगर भविष्य में कभी जातिगत जनगणना होती है और अगर आरक्षित श्रेणी की जातियों की तादाद अभी के अनुमान से ज्यादा पाई जाती है तो निश्चित तौर पर उन्हें आबादी के अनुपात में आरक्षण बढ़ाने की मांग मजबूत होगी। जब से ईडब्लूएस कोटा दिया गया है तब से ही ओबीसी कोटे को 27 प्रतिशत से बढ़ाने की मांग उठती रही है। तर्क है कि 50 प्रतिशत से ज्यादा कोटे का रास्ता साफ हो गया है। खास बात ये भी समझने की जरूरत है जो सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कही है। क्या आर्थिक आधार पर आरक्षण जायज है? इस सवाल पर बेंच के सभी 5 जज सहमत थे कि आरक्षण का आर्थिक आधार संविधान की मूल भावना के खिलाफ नहीं है। हालांकि, इस बात पर जजों की राय बंटी हुई थी कि ईडब्लूएस के तहत सिर्फ उन लोगों को आरक्षण का लाभ क्यों मिले, जो सामान्य वर्ग से हैं।

सीजेआई ललित और जस्टिस रविंद्र भट ने एससी, एसटी और ओबीसी को ईडब्लूएस के दायरे से बाहर रखने को 'भेदभाव वाला और मनमाना' बताया। एक तरफ जहां जस्टिस माहेश्वरी, त्रिवेदी और पार्दीवाला संविधान संशोधन से सहमत थे, वहीं सीजेआई ललित और जस्टिस भट ने अपने फैसले में कहा कि एससी, एसटी और ओबीसी को ईडब्लूएस कोटा का लाभ नहीं देना और सिर्फ फॉरवर्ड क्लास के गरीबों को इसके दायरे में रखना 'समानता के सिद्धांत की मौत की मुनादी' की तरह है।

संविधान संशोधन को जायज ठहराने वाले सभी तीन जजों ने अलग–अलग फैसला सुनाया जबकि जस्टिस भट ने अपने साथ–साथ सीजेआई की तरफ से भी फैसला लिखा। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद एक बात बिल्कुल साफ हो गई है। देश में अब आरक्षण के लिए दो आधार हो गए हैं। एक जाति के साथ पिछड़ापन और दूसरा गरीबी और आर्थिक मानदंड। यह देश में आरक्षण की अब तक की कहानी में एक महत्वपूर्ण क्षण है। सामाजिक नीति में, विधायिकाओं, विश्वविद्यालयों और नौकरियों में सीटों के आरक्षण को पिछड़े समुदायों और समूहों को सशक्त बनाने के लिए सरकारों के लिए उपलब्ध एक उपकरण के रूप में देखा जाता है। इस लिहाज से यह टारगेट सब्सिडी या कल्याणकारी योजना की तरह है। हालांकि, भारत में आरक्षण केवल एक और सामान्य उपकरण नहीं है। इसका एक विशेष ऐतिहासिक महत्व भी रहा है। अगस्त 1932 में ब्रिटिश सरकार ने कम्युनल अवॉर्ड की शुरुआत की। इसमें दलितों के साथ–साथ कई समुदायों को भी अलग निर्वाचन क्षेत्र का अधिकार मिला। इसके साथ ही दलितों को 2 वोट का अधिकार भी मिला। अंग्रेजों के इस फैसले के खिलाफ महात्मा गांधी आमरण अनशन पर बैठ गए। वहीं, अंबेडकर का मानना था कि दलितों को दो वोट के अधिकार उनके विकास में अहम कदम साबित होगा।

यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव का प्रतीक है – देश में आरक्षण अब केवल जाति के बारे में नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है, जैसा कि प्रमुख बहुमत की राय बताती है, जाति–आधारित आरक्षण के माध्यम से गहरे बैठे जातिगत पूर्वाग्रहों के खिलाफ लड़ाई बंद हो जाती है। इसका सीधा सा मतलब है कि अब अतिरिक्त आरक्षण का लाभ गरीबों को भी मिलेगा। ईडब्ल्यूएस आरक्षण को 'अगड़ी जाति' आरक्षण मानना भ्रामक है। संविधान संशोधन का पाठ स्पष्ट है – यह सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के अलावा अन्य किसी के लिए भी उपलब्ध है, जिनके पास पहले से ही आरक्षण है। इसमें अगड़ी जातियों के गरीबों के अलावा, मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों के गरीब शामिल हैं।

देश में आरक्षण की जो वर्तमान व्यवस्था है वो 1960 में शुरू की गई थी। इस दौरान डा. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यह आरक्षण केवल 10 साल के लिए होना चाहिए। हर 10 साल में यह समीक्षा हो कि जिनको आरक्षण दिया जा रहा है, क्या उनकी स्थिति में कुछ सुधार हुआ है कि नहीं? ये बहुत गंभीरता से सोचने वाली बात है। उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि यदि आरक्षण से किसी वर्ग का विकास हो जाता है तो उसके आगे की पीढ़ी को इस व्यवस्था का लाभ नहीं देना चाहिए, क्योंकि आरक्षण का मतलब बैसाखी नहीं है, जिसके सहारे सारी जिंदगी जी जाए। यह तो विकसित होने का एक आधार मात्र है, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। लेकिन वोट की राजनीति के तहत आरक्षण बिना विचारे लगातार बढ़ता गया। इसलिए आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडू आदि कई राज्यों में आरक्षण 69 प्रतिशत तक हो चुका है।

आज जब देश तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहा है, तो उसे फिर से पीछे धकेलने की साजिश क्यों की जा रही है? आरक्षण की सीमा जब पचास प्रतिशत से भी पार जा रही है तो ये भी बात करना जरूरी है कि क्या आरक्षण को अभी भी जारी रखना समाज को एक तरह से दो हिस्सों में बांटने की तरफ तो नहीं चल पडा है। आरक्षण आज देश की जरूरत है या नहीं इस पर बात करने की जरूरत है। आज यूक्रेन में मैडीकल की पढ़ाई करने गए भारतीय बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है? आखिर इनको यूक्रेन जाने की जरूरत क्यों पड़ गई? यह एक तरह से प्रतिभा का पलायन है। भारत में एम.बी. बी.एस. की 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। यूक्रेन में कर्नाटक के छात्र नवीन की मौत हुई है, जो नीट परीक्षा में 97 प्रतिशत नंबर लाकर भी सरकारी कालेज में एम.बी.बी.एस. की सीट हासिल नहीं कर पाया था। इसके चलते इसे यूक्रेन जाना पड़ा। यह कहानी नवीन जैसे कई छात्र–छात्राओं की है। हमें इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। हमें इन नवीनों को देश से बाहर जाने से रोकना ही होगा।

इस पर भी बात करने की जरूरत है कि आज देश में आरक्षित वर्ग से देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तक बन गए हैं तो आरक्षण को जारी रखा जाए या नहीं? कई विभागों में बड़े अधिकारी आरक्षित वर्ग से हैं। कई बड़े नेता आरक्षित वर्ग से हैं। फिर हम यह कैसे मान सकते हैं कि आज भी दलित वर्ग का विकास नहीं हो पाया है? आज भारत तेजी से बदल रहा है। जातिगत व्यवस्था से ही एक उदारवादी वर्ग उभरा है, जहां दलितों को बराबरी का दर्जा दिया गया है। अब देश में पहले की तरह भेदभाव नहीं रहा, हालात पूरी तरह नहीं, तो बहुत हद तक बदल गए हैं। देश में स्वर्णों ने आरक्षण की मांग उठाई। अन्य कई वर्ग भी आरक्षण की मांग उठा रहे हैं। आखिर क्यों ऐसी स्थिति बन रही है? यह स्थिति आरक्षण की खराब व्यवस्था के लगातार जारी रहने के कारण बनी है। यह व्यवस्था देश को पीछे की ओर ले जा रही है। सामाजिक सद्भाव के नाम पर जाति हित देखा गया है। यह सीधे–सीधे समाज को बांटने, उसका ढांचा बिगाडने की कोशिश है। हरियाणा पंजाब, जैसे कृषि बाहुल्य राज्यों में कृषि पर आधारित मुख्यतः जाट, जट सिक्ख की स्थिति खेती की जोते बेहद कम होने तथा कृषि में लगातार बढ़ रहे घाटे के कारण दयनीय होती जा रहीं। यह वर्ग लम्बे समय तक ओबीसी आरक्षण के लिये संघर्ष कर रहा है लेकिन दबंग वर्ग का नाम देकर इसकी आर्थिक स्थिति पर कोई विचार नहीं किया जा रहा।

आरक्षण ने सामाजिक वैमनस्य को बढ़ावा दिया है इसलिए देश का युवा वर्ग इस व्यवस्था को पूरी तरह से खत्म करने के लिए नो रिजर्वेशन जैसे कैंपेन चला रहा है। बहुत बडा तबका इसकी मांग कर रहा है कि आज हर तरह का आरक्षण पूरी तरह समाप्त होना चाहिए। किसी को एक प्रतिशत भी आरक्षण नहीं मिलना चाहिए, न सरकारी नौकरियों में और न ही राजनीति में। इसकी जगह आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की शिक्षा पूरी तरह निःशुल्क की जानी चाहिए। चाहे वह बच्चा दलित का हो या फिर स्वर्ण का। जिसकी सालाना घरेलू आय 5 लाख रुपए से कम है, उसके बच्चे को निःशुल्क शिक्षा मिले। प्रतियोगिता परीक्षा में कोई आरक्षण न हो, न ही किसी भी तरह का पक्षपातपूर्ण रवैया। सबके लिए खुला मैदान होना चाहिए। जो प्रतिभाशाली होगा, आगे निकल जाएगा और जो प्रतिभाशाली नहीं होगा, वह पीछे रह जाएगा।

इसके अलावा राजनीति में भी आरक्षण पूरी तरह समाप्त होना चाहिए। जनप्रतिनिधियों पर देश निर्माण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। कमजोर प्रतिनिधि देश के निर्माण में सहायक नहीं हो सकते। सभी को समान अवसर मिलना चाहिए। देश को पीछे मत ले जाइए। आरक्षण को हटाने की पहली प्राथमिकता बनाइए। आजादी के बाद से काफी कुछ बदल गया है। एक सामाजिक क्रांति देखी गई है। दलित जातिगत व्यवस्था के दबाव से निकलने लगे हैं। देश को बचाइए, किसी जाति को नहीं। गरीबी के कारण पैदा हुई असमानता को ठीक करने के लिए बेहतर स्कूली शिक्षा, छात्रवृति व अन्य शैक्षणिक सुविधाये प्रदान करनी होगी। नौकरी के बेहतर अवसर देने के लिये शिक्षा के नीजिकरण को रोकना जरूरी है। जिसके कारण गरीब बच्चों के लिये अच्छी शिक्षा पाना दुभर हो गया है।

आरक्षण के माध्यम से समाज का अत्यधिक विभाजन एकता और बंधुत्व के संवैधानिक आदर्श के लिए अच्छा नहीं है। जाति आधारित आरक्षण अब तक समाज के हाशिये पर मौजूद दलित वर्गों के लिए सम्मान सुनिश्चित करने की अंबेडकरवादी समझ से काफी आगे निकल गया है। अब, चूंकि गैर–जाति आधारित आरक्षण के लिए दरवाजा खोल दिया गया है, आरक्षित सीटों के लिए उम्मीदवारों की सूची केवल बढ़ेगी। जिस तरह से चीजें घटित हो रही है उससे समाज को सांप्रदायिक रूप से टुकड़ों में बंटने का रिस्क है। बंटवारे की बीमारियों को ठीक करने के लिए आरक्षण एक एंटी डोट है, लेकिन बड़ी मात्रा में, यह समस्या का हल करने की तुलना में अधिक समस्याएं पैदा कर सकता है। भारत के लिए आगे का रास्ता पिछड़ेपन की नई परिभाषाओं से नहीं हो सकता।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाट आर्य हैं

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

जट्ट शब्द समूह के लिए प्रयोग होता हैं। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है कि जिसमें बिखरी हुई ताकतें इक्कट्टी हो जायें। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है जाट। इन दोनों का अर्थ एक ही है। यह जाट संघ आर्य राजवंशों व क्षत्रियों के संगठन से बने हैं जो कि आर्य थे। इसके कुछ उदाहरण उन जाट गोत्रों के दिए गए हैं जो कि चन्द्रवंशी आर्य चक्रवर्ती सम्राट ययाति के वंशज हैं और कुछ सूर्यवंशी (ययातिवंशी) है। जाट केवल एक हिन्दू जाति ही नहीं, वास्तव में एक नस्ल है। जातियों की पहचान के लिए अंग्रेज विशेषज्ञों ने कई साधन निकाले जैसे शारीरिक बनावट और भाषा आदि। शरीर शास्त्र के अनुसार विशेषज्ञों ने मनुष्य जाति को पांच भागों में बांटा है जैसे :– 1. आर्य 2. मंगोलियन 3. हब्शी 4 मलय (मलायापन) 5. अमेरिकन रंग के हिसाब से गौरे, काले, बादामी, लाल, पीली, काली आंखें, लम्बी बांहें व ऊंचे कद काठ के होते हैं। "हिस्ट्र ऑफ आर्यन रूल इन इन्डिया" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मानव तत्वाविज्ञान की खोज से सिद्ध हुआ है कि भारतीय आर्य जाति, जिसको आर्यन साहित्य में लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाओं शेर की तरह पतली कमर, लम्बी टांगों वाली जाति बतलाया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कश्मीर आदि प्रदेशों में यह नस्ल पाई जाति है। लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, गोरा रंग या गेहूंआ रंग, काले बाल, ऊंची गर्दन काली आंखें, पतली व लम्बी नाक आदि से भली भांति पहचाने जा सकते हैं क्योंकि जाट व आर्यन युवक का शरीर काफी फुर्तिला और गठीला होता है। इस तरह के लक्षणों की देखकर ही मि. नेसफिल्ड ने बलशाली शब्दों में कहा कि रंग रूप यदि कुछ समझे जाने वाली बात हैं तो जाट आर्यो के इलावा और कुछ नहीं हो सकते। वास्तविकता भी यही हैं कि वैदिक आर्यों के वंशज जाटों के लक्षण आज के जाटों में भी पाए जाते हैं।

सन् 1901 ई० की जनगणना की रिपोर्ट पेज 500 पर सर एच.रिजले साहब ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि जाट शारीरिक बनावट के आधार पर आर्य हैं। कुछ देसी तथा विदेशी इतिहासकारों ने शारीरिक गठन, स्वभाव, रहन–सहन, आचार–विचार, रिती–रिवाज, परम्पराऐं, प्रशासनिक प्रबन्ध राजनैतिक विकास पर विचार आदि उसके इलावा साहसिक प्रवृति और भूमि उत्पादन अनुसन्धान को अपना बिन्दु मानकर भारतीय जाटों को यूरोप के प्राचीन आर्य, गेटी, मैसेगटाई (महानजाट) यूचि, यति, जातिका आदि जातियों के साथ संबंध बताया है। भारतीय सीमाओं का भौगोलिक अंग होने के बाद भी भारतीय आर्य जाति के जाटों के शकद्वीप (सिन्धू प्रदेश) में जाकर बसने के कारण ही विदेशी शक, भारतीय शक अथवा इन्डोसिथियन प्रभावित करने का प्रयास किया है। भारतीय सीमान्त प्रदेश कन्धार, गजनी और यदु की पहाड़ियों को निकास का केन्द्र बिन्दू माना है। लेकिन जाट आर्य पुत्र भारत की ही सन्तान है। ब्रजमंडल और दोनों मालवा के मूल निवासी है। सम्पूर्ण जाट अपने आपको एक स्तर से यदूवंशी (चन्द्रवंशी) सनतान मानते हैं जब कि इनमें सूर्यवंशी और नागवंशी शाखाओं के जाट कुटुम्ब कबिलों को भी अगर मिला लिया जाए तो हमें गहन अध्ययन से पता चलेगा कि मध्य एशिया, अरब और यूरोप में पाये जाने वाले आर्यन जाट भारतवर्ष से ही पलायन करके गए हैं क्योंकि सिन्धू घाटी की सभ्यता ही सबसे पुरानी वैदिक सभ्यताएं हैं मैसोपोटामिया और मिश्र की सभ्यता तो सिन्धू घाटी की सभ्यता के काफी समय बाद पनपी हैं।

कर्नल जैम्स टॉड का मत है कि जाट इन्डोसिथियन कुल के हैं जो कि ईसा से एक सौ वर्ष पूर्व अपने निवास स्थान ऑक्सस घाटी से पंजाब में चले गए थे। कनिघम, इब्बेटसन और विसेन्ट, स्मिथ ने इनका समर्थन किया है। जैक्सन और कैम्पबैल ने इनका संबंध कुषाण और यूचि से बताया है। डॉ० ट्रम्प और बीम्स ने शारीरिक तथा भाषा दोनों दृष्टि से जाटों को शुद्ध इन्डो आर्यन वंशज होने का दावा किया है। मिलर ने भी इनका ही समर्थन किया है। इसलिए बीम्स ने पृष्ट 128 पर कहा है कि जाट शूरसेन की पुरानी सीमाओं को छोड़कर कभी बाहर नहीं गए।

कानूनगो के अनुसार शारीरिक विशेषताओं, भाषा, चरित्र आदि से जाट वैदिक आर्यों के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि हैं। इतिहास में जाट काफी निर्भिक लड़ाकू के रूप में जाने जाते हैं। ये मुख्यतया कृषक हैं। यही कारण है कि इस जाति ने सिन्ध, पंजाब, मध्यप्रदेश की मालवा, राजस्थान, गंगा का दोआब के पश्चिमी हिस्सों में काफी निर्माण कार्य किया। डॉ० इरविन के अनुसार 'जाट' अपने गांव की सरकार में राजपूतों की बजाय अधिक प्रजातांत्रिक होते हैं। वंशानुगत अधिकार के प्रति उनका लगाव कम होकर लोगों द्वारा चूने हुए मुखिया को प्राथमिकता देते हैं। जो कि आर्यो की रिती के अनुसार है मजबूत सामाजिक बन्धन तथा प्रशासन के प्रजातान्त्रिक विचारों की अटूट परम्परा के साथ–साथ अपने भाई की विधवा के साथ शादी का रिवाज और नियोग की मान्यता जाटों की कुछ ऐसी सामाजिक विशेषताएं है जो उन्हें हिन्दुओं के किसी उच्च जाति की अपेक्षा वैदिक आर्य होने के सच्चे प्रतिनिधि होने के दावो को सिद्ध करती है।

कर्नल टॉड ने सकन्दनाभ में जाटों की बस्तीयों का वर्णन किया है। किन्तु जिस समय सकन्दनाभ बस्तीयों का वर्णन किया है, उससे कई शताब्दी पहले भारत में जाटों का अस्तित्व पाया जाता है। जाट भारत से ही अरब, यूरोप, मध्य एशिया व पूर्वी एशिया सभी जगह भारत से ही गए है।

श्री चिन्तमणि विनायक वैघ मानते हैं कि किसी भी विदेशी इतिहास में ऐसा कहीं नहीं लिखा कि जाट किस देश से भारत में आए।

पं. इन्द्र मिथावाचस्पति "मुगल साम्राज्य का उदय और कारण" नामक इतिहास पुस्तक में यही बात लिखते हैं कि "जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतीय ही हैं और यदि जाटों के भारत से बाहर कहीं भी निशान मिलते है तो वह भी भारत से ही गए हुए है।" (जाट इति. पृ. 65–66 डॉ. देशराज)

जाट हुणों के संबंन्धी नहीं बल्कि शत्रु थे जाटों ने हुणों का सामना किया और उनको परास्त किया। अतः जाट पंजाब के ही निवासी थे। मंदसौर के शिलालेख वाला यशोधर्मन, जिसने हुणो को लगातार परास्त किया था वह विर्क गोत्र का जाट था। जाट मालवा में भी उस समय से पहले ही सिन्ध की ही तरह पहुंच चुके थे। जाट हमेशा हुणों के विरोधी रहे हैं और जाट भारत में सबसे शुद्ध आर्य है तथा आर्यो का बाहर से आकर भारत में बसने के कोई भी प्रमाण नहीं मिलते। जाटों का भारत में आने का न तो कोई विदेशी इतिहासकारो का कथन है और न ही जाटों की अपनी ही कोई दन्त कथा है। इसके इलावा न ही कोई ऐतिहासिक व शिलालेख के प्रमाण हैं। जो कुछ थोड़ा बहुत युरोपियन इतिहासकार जाटों को सिथियन और विदेशी साबित करने की असफल कोशिश करते हैं में उनका ये केवल भ्रम मात्र ही मानता हूँ। जाट न हुणो, शको व न सिंथियनों की औलाद हैं, बल्कि वे विशुद्ध आर्य हैं। सिंथिया में भी जाट भारत से ही गए थे।

जाट ने तो सिंथियन हैं, न जथरा हैं और न ही मध्य एशिया के जथरा की पहाड़ियों से आए हैं किन्तु जाट तो सच्चे भारत माता के पुत्र हैं जिन्होंने पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, यु. पी. व मध्य प्रदेश का मालवा को अपने पुरूखों का ही घर बतलाया हैं। जाटों से इस बात का स्वीकार करवाना कि वे पुराने यादवों की संतान नहीं हैं बहुत मुश्किल हैं।

अब मानवतल अनुसंधान शास्त्र के अनुसार जाटों के आर्य होने के कुछ प्रमाण निम्न प्रकार से दिए गए जाते है। मानवतत्व विज्ञान में की गई एक खोज के अनुसार भारतीय आर्य जाट जाति के बारे में कहा गया है कि हिन्दु वैदिक ग्रन्थों में लम्बे कद–काठ सून्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाएं शेर की सी कमर, हिरण जैसे पतली टांगों वाली, गोरे व गेहूं रंग की जाति बतलाया हैं जैसी कि यह प्राचीन समय में थी। आधुनिक भारत पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, यू.पी. और कश्मीर में जाट, राजपूत और क्षत्रि आदि जातियों के नाम से पुकारी जाती है। प्राचीन आर्य जाति भारत की ही निवासी थी। इन्होंने ही विदेशों में जैसे अरब युरोप, मध्य एशिया व पूर्व एशिया में जाकर राज्य स्थापित किए और उन्हीं में से कुछ दोबारा भारत में आकर बस गए क्योंकि इनकी शारीरिक बनावट आपस में मेल खाती है।

भाषा विज्ञान के अनुसार जातियों को पहचाने का जो तरीका हैं उसके अनुसार जाट आर्य है। इसके प्रमाण मि. सर. हैनरी, एम. इलियट के सी.बी. "डिस्ट्रब्यूसन ऑफ दी रेसेज ऑफ दी नोर्थ वैसटर्न प्राविंशेज ऑफ इण्डिया" में लिखते हैं कि बहुत समय हुआ कि मैंने कराची से पेशावर तक यात्रा करके अनुभव किया कि जाट लोग कुछ खास परिस्थितियों के इलावा अन्य शेष जातियों से अधिक अलग नहीं हैं। भाषा से जो कारण बताया गया है वह जाटों और आर्यों की भाषा एक ही है क्योंकि जाट विशुद्ध रूप से आर्य ही हैं क्योंकि आर्य जाटों के इलावा बहुत कम संख्या में हैं। यदि सिथियन होते तो उनकी सिथियन भाषा कहा चली गई। ऐसे कैसे हो सकता है कि वे अब आर्य भाषा को जो कि हिन्दी की ही एक शाखा है, उसको बोलते है जिसे खड़ी भाषा यानि हरियाणवी भी कहते है, बोलते हैं। ये हरियाणा के जाटों यानि हरियाणवी आर्यों की भाषा है। इसे वे सदियों से बोलते चले आए हैं। पेशावर से डेरा जाट और सुलेमान पर्वतमाला के पार कच्छ गोंडवाना में यह भाषा हिन्द की या जाट की भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शारीरिक बनावट व भाषा ऐसी चीज हैं कि उनको दरकिनार नहीं किया जा सकता। (जाट इति. पृ. 62 देशराज)

शरीर की बनावट व भाषा इन दो पहचानों से सभी जातियों का पता चल जाता है इसके इलावा धार्मिक भावना व रिती रिवाजों से भी हर जाति का पता चल जाता है कि यह किस नस्ल व देश की है। इस सिद्धान्त के अनुसार जाट आर्य नस्ल से ही संबंधित है। अतः धार्मिक भावनायें और रिती–रिवाज उन्हें वैदिक आर्यों का सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध करती है। यह निर्विवाद सही बात है कि "जाट विशुद्ध रूप से आर्य है"। जाट अपनी वीरता से सारे संसार में प्रसिद्ध रहे हैं क्योंकि प्रथम व द्वितीस विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने जाटों की वीरता को भली–भांति देखा था।

कारनामा राजपूत का लेखक श्री नजमुल रामपुरी लिखता है कि जाट जाति के अभ्यास, स्वभाव, रिति–रिवाज, रहन–सहन से पता चलता है कि वे सिन्ध नदी के पूर्व–पश्चिम में दोनों तरफ पाये जाते हैं। यदू/यादवों से ही उनका निकास सम्भव होता है। जाट जाति को कृष्णवंशी होने का गौरव प्राप्त है। इसी तरह सुख संपत्ति राय जी भंडारी ने अपने "भारत के देशी राज्य" नामक महाग्रन्थ में लिखा है कि "जाट आर्य वंश के है और प्राचीन काल में भारत में उनके

निवासी होने के एतिहासिक प्रमाणिक उल्लेख भी मिलते हैं। यह भी पता चलता है कि जाट क्षत्रिय और उच्चकुलीन माने जाते थे क्योंकि जाट क्षत्रिय थे और क्षत्रियों को समाज में उच्च कुलीन माना जाता है और जाट आज भी उच्च कुलीन ही है क्योंकि जाटों को समाज में आज भी अन्नदाता कहा जाता है और अन्नदाता का समाज में 'प्राचीन वैदिक काल से ऊंचा दर्जा रहा है।'

आर्य लोग सामाजिक मामलों में अधिक उदार (श्रेष्ट) होने के कारण गत शताब्दीयों में पौराणिक मनोवादियों की आंखों में खटकने लगे और जाटों को तुच्छ घोषित कराने का प्रयास भी चलता रहा लेकिन यह कोशिश असफल ही रही। इसके अलावा अनेक अरबी इतिहासकारों ने भी कहा कि जाट ही भारत वर्ष के असल आर्य है क्योंकि ये इतिहासकार तो सारे भारत वर्ष को ही आर्य जाटों का देश मानते थे। इलियट साहब ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" अरब इतिहासकारों के हवाला देकर इसी बात को दोहराया है कि इसके अलावा डा. ट्रम्प, बीम्स, सर रिजले, सर जेम्स, ग्रियर्सन, भाई परमानन्द, यदुनाथ सरकार, प्रो. इन्द्र, स्वर्गीय राजा लक्ष्मण सिंह, कालिका रंजन कानूनगो योगेन्द्र पाल शास्त्री, ले. रामस्वरूप जून, यू. एन. शर्मा, डॉ. देशराज, पं. लेखराम आदि सुप्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्धानों ने एक स्वर में कहा है कि जाट नस्ल से आर्य हैं। उपरोक्त उदाहरणों से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि जाट न तो शको, न सिंथियनों और ना ही हुणों की सन्तान है। जाट विशुद्ध रूप से आर्य है। इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि जब हुणों शको व सिंथियनों का कहीं नामों निशान भी नहीं था, जाट उस समय भी भारतवर्ष पर राज करते थे।

जाट इतिहास की कमी ने जाटों को उनके उच्च स्थानों से गिराने में बहुत सहायता दी है। मथूरा मेमायर्स के लेखक मि. ग्राउस ने जाटों को अपना इतिहास न लिखने पर बहुत फटकार लगाई। वास्तव में उनकी कोई एतिहासिक पुस्तक न पाकर दूसरे लोगों से जैसा उन्होंने सुना था या बताया गया, वे लिखने को विवश हुए। यह सिद्ध करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जाट इंडोआर्यन हैं जिन्हें किसी इतिहासकार व गजेटियर के संपादक ने इंडोसिंथियन लिख दिया क्योंकि वे जाटों के भारतीय इतिहास से अनभिज्ञ थे। 90 प्रतिशत इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से जाटों को प्राचीन आर्यों के विशुद्ध वंशज बताया है। जाटों ने इस बात के विरूद्ध न तो आवाज उठाई कि कोई उनके विरूद्ध कौन कैसा प्रचार कर रहा है। न ही कोई प्रतिवाद किया। फिर भी निष्पक्ष विद्धान इतिहासकारों को यह स्पष्ट रूप से मानना पड़ा कि जाट आर्य हैं और प्राचीन आर्यों के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं। जाट इतिहास पेज 67–68 डॉ. देशराज व लेखक भी इससे सहमत है।

डॉ. ट्रिम्प कहते हैं कि "सिन्ध की आदि निवासी जाति जाट है।" इसमें कोई संशय नहीं हैं कि ये जाट इस देश के निवासी दिखलाई देते हैं, वे विशुद्ध आर्य वंश से ही हैं"।

श्री कुद्रयात्सेन का मत है कि जनगणना की सूचना, दूसरे सरकारी पत्र प्रमाण, नृव्यविद्या की जांच (इबस्टन, क्रुक, रोज, वर्तमान ग्रन्थकार) परम्परा से जाटों को एक अलग कुल या कुलों – वंशों का संघ (गण) मानते है"। कुछ लेखकों का कहना है कि भारत पर सिंथियनों के आक्रमण से काफी समय पहले जाट लोग सिंध प्रान्त में आबाद थे और उनका संबंध महाभारत के युद्धों और योद्धाओं से था।

जहां भी रक्षा का प्रश्न उठता है, बलिदान की आवश्यकता होती हैं वहां इन जाट वीरों को सबसे पहले याद किया जाता है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जाटों की गौरवपूर्ण बल शक्ति पर भारतीयों का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने भाषण में कहा था कि "जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है। भारत को इस साहसी वीर जाति से बहुत बड़ी आशाएं हैं"।

अरब यात्री अनुलारिह मुहम्मद बिन अहमद अलबुरूनी ने "तहकीकए हिन्द" में भगवान श्री कृष्ण को जाट लिखा है। स्पष्ट है जाट, संघ क नाम से जाट, किन्तु जाति के नाम से आर्य हैं।

जाटस दी एनशियन्ट रूलरज लेखक डॉ. भीम सिंह दहिया ने पृ. 81 पर भविष्य–पुराण का हवाला देकर लिखा है कि "जाट आर्य है" आगे डॉ. दहिया साहब ने पृ. 97–98 पर जाटों के बारे में लिखा है कि "प्रसिद्ध इतिहासकारों के शब्दों में वर्तमान समय के जाट, शारीरिक बनावट, भाषा, चरित्र, बुद्धि शासन की योग्यता तथा सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से निसन्देह प्राचीन वैदिक आर्यों के उच्चतर प्रतिनिधि हैं। बनिस्बत (तुलना में) हिन्दू जाति के उन तीन ऊंचे कुल के किसी भी सदस्य से, जिन्होंने अवश्य ही अपना मौलिक चरित्र बहुत कुछ खो दिया है"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जाटों को विशुद्ध रूप से आर्य माना है। स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एकादश पृ. 227–28 पर जाट जी और पोप जी की एक घटना का उदाहरण देकर जाट जी का बड़ा सम्मान किया है। क्योंकि पोप जी की पोपलीला का जाट द्वारा भण्डाफोड़ किया गया था, तो स्वामी जी ने जाट को बड़ा सम्मान दिया था। स्वामी जी पोप लिला के बहुत ही खिलाफ थे। उन्होंने पोप लिला के खिलाफ काफी प्रचार किया था जिससे सामाजिक कुरितियों को काफी हद तक कम करने का स्वामी जी को बल मिला था।

जाट धर्म, भाषा, संस्कृति सभ्यता, शासन पद्धति के आधार पर पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी आर्य हैं। एक ईश्वर मं विश्वास, गुण कर्म स्वभाव आधार पर छोटा बड़ा समझना,

जगत जननी स्त्री जाति का पूर्ण सम्मान करना, प्रान्तीय भेदभाव से दूर रहना, विद्वानों का सम्मान करना, युद्ध व कृषि के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर करना, इसको संक्षेप में "सम्मान के साथ जीना और सम्मान के साथ मरना" जाटों की विशेषताएं रही है जो कि ये सभी विशेषताएं आर्यों में ही पाई जाती हैं। जाट–समाज–धर्म सुधार में सबसे आग रहते हैं। इनकी समाज, मानव–समाज सेवा के गुणों के कारण ही इन्हें भिन्न–भिन्न स्थानों पर चौधरी, ठाकुर पटेल, सरदार प्रधान, मिर्घा, फौजदार, मलिक/मालिक आदिनामों से सम्मान के साथ सम्बोधित किया जाता है। ये उपलब्धियां जाटों का क्षत्रिय होना भी सिद्ध करती हैं।

जाट एक ईश्वर को ही मानते हैं। वेदों के आधार पर ईश्वर के एक होने के लिए सम्पूर्ण आर्य साहित्य ने बल दिया है। महात्मा बुद्ध ने जब ढकोसलों और पाखण्डों के विरूद्ध समाज में घोषणा की तो सभी जाट संघों ने बौध धर्म अपना लिया था और जितने भी प्राचीन काल में शक्तिशाली सम्राट हुए अशोक महान से लेकर, समुन्द्र गुप्त व हर्षवर्धन आदि सभी जाट शासकों ने बौध धर्म अपना लिया था क्योंकि महात्मा बुद्ध भी स्वयं जाट थे। जब अरब के मरूस्थल में उठते हुए "लाइलाह इलिल्लाह खुदा एक ही है" के नारे को पश्चिमी भारत के सीमान्त प्रदेश की एक ईश्वर विश्वासी जाट जनता ने सुना तो उधर सामुहिक रूप से मुसलमान होकर एक खुदा की इबादत करने लगे। शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट आदि के प्रयत्नों से जब नवीन हिन्दु धर्म की स्थापना की गई तब जाट उन पौराणिको की ओर आकर्षित न होकर उनके फंदें में न फंसे। उनके विचारों में एक ईश्वरवाद के विपरित अस्थिरता आना ही चाहती थी कि ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना दिव्य सन्देश सुनाकर उन्हें शुद्ध वैदिक मत का मार्ग दिखाया। हिन्दु जाटों ने उनके उपदेशों के सामने आत्म समर्पण कर दिया। आज परिणाम यह है कि हिन्दू कहलाने वाले सम्पूर्ण जाट वैदिक मतानुयायी आर्य समाजी हैं। वैसे तो आज के समाज में काफी कुरितियों के कारण आर्य समाज दम तोड़ने के कगार पर खड़ा है, क्योंकि जाटों में ही आर्य समाज का भाव देखा गया हैं क्योंकि जाट ही सच्चे मायनों में वैदिक आर्यों की सन्तान हैं। इसी प्रकार गुरू नानक जी ने भी जब सिक्ख सम्प्रदाय की नीवं डाली तो पंजाब के जाटों ने ही सर्वथा सामुहिक रूप से सिक्ख धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से समस्त भारत के जाट वैदिक धर्मी रूप में एक ही ईश्वर को मानता है और उसी का ध्यान करता है। जो जाटों की अपनी निराली विशेषता है।

गुण कर्मानुसार छोटा बड़ा मानना – आर्य संस्कृति की प्रबल पोषक वर्ण व्यस्था का खात्मा होने पर वंशों की ऊंच–नीच की इतनी प्रबलता हुई कि वर्ण से नीचे जाति–जाति में पारस्परिक घृणा के भाव घर कर गए। आखिरकार यह हुआ कि राम के वंशज, कृष्ण के वंशज दूसरो को तुच्छ मानने लगे और समाज में यह जहर फैलता ही चला गया। उनकी ऊंच–नीच का यह परिणाम है कि प्रयत्न किए जाने पर भी आज तक कभी भी ब्राह्मणों का कोई संगठन सम्पन्न नहीं हुआ। अहिरों में नंदवंशी और यादव, गुजरों में बडगुजर, मराठों में भौंसले आदि सभी अपने आपको श्रेष्ठ मानने लगे। जाटों में सबसे अधिक लगभग 5000 गोत्र हैं। जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है।

स्त्रियों को समान अधिकार भी प्राचीन समय से ही जाटों में ही दिए जाते है जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है। दूसरी जातियों में तो विधवा को अभिषाप माना जाता था लेकिन जाटों में ऐसा नहीं है वैदिक काल से ही विधवा का विवाह दूसरे भाईयों से करवा दिया जाता था, यह प्रथा वैदिक काल से ही आर्यों की प्रथा रही है। यदि किसी अन्य जाति की लड़की का विवाह जाटों में होता है तो उसे वही जाटनी वाला सम्मान मिलता है क्योंकि जाटों की एक कहावत है कि जाट के घर आई और जाटनी कहलाई।

लोकश्रुति के अनुसार जाट जाति अपने जैसे ही वीर पुत्रों को जन्म देती हैं। इस प्रकार के सभी सम्मान से जाट जाति क्षत्रियों में वह पारसमयी है जो लोहे को सोना बनाने की क्षमता रखती है। जाटों ने घर, बाहर सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को समानता प्रदान की हुई है। अपने भाई की विधवा से विवाह करना जाटों की प्रथा वैदिक शास्त्रों के भी अनुकूल है जो कि जाटों का आर्य होने का मजबूत प्रमाण दर्शाता है। चौथी शताब्दी में सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने भाई समुन्द्रगुप्त की विधवा से ही विवाह कर लिया था। वे धारण गोत्र के जाट थे। गुप्तकाल के सभी शासक धारण गोत्र के जाट शासक थे। इनके समय में भारतवर्ष को संसार में सोने की चिड़ियां कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ था। इनकी राजधानी मगध थी। 1300 ई. में मालदेव राठौर ने अपनी विधवा बेटी की शादी राणा हमीर देव मेवाड़ शासक से कर दी थी। आजकल हिन्दुओं की अन्य जातियों ने भी जाटों के देखा–देखी विधवा विवाह करवाना शुरू कर दिया।

प्राचीन आर्य मांस नहीं खाते थे और जाटों में भी मांस न खाने की परम्परा अब तक आ रही है। समय के फेर में अब हिन्दूओं में बहुत सी जातियों में मास खाने लग गए हैं। लेकिन जाटों में आज भी बहुत ही कम लोग मांस खाते है क्योंकि ये प्राचीन आर्यों की ही संतान है।

भेदभाव से परे रहना। बौध काल के पश्चात नवीन हिन्दु धर्म के समय हिन्दुओं की सभी जातियों में ऊँच–नीच का भेदभाव प्रबल रूप से पैदा हो गया। प्राचीन भारत की सभी विशेषताओं की सच्ची स्मारक जाट जाति में आज भी अखिल

भारतीय अटूट संबंध बना हुआ है। केवल जाट कह देने से ही सारे भारतवर्ष में बिना भेदभाव के खानपान और रोटी बेटी का संबंध आज भी विद्यमान हैं सामाजिक संगठन के प्रेमभाव से सभी स्थानों के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाट आपस में एक है। वंशागत, ऊँच–नीच से दूर यदि कोई संगठन में आदर जाती है, तो वह केवल जाट ही है जोकि केवल वैदिक आर्यों के ही गुण रखने वाली जाति है।

जाटों का शारीरिक गठन, धर्म, समाज, विवाह, पंचायत और भाषा के विषय में सभी प्रकार से जाटों और आर्यों में कोई भेद नहीं हैं क्योंकि जाट की वैदिक आर्यों की संतान हैं। विवाह शादी करते समय जाटों में अपना, मां, दादी व मौसी, पिता की दूसरी व्याख्या आदि का गोत्र छोड़ते हैं। यह विशेषता जाटों के आर्य नस्ल होने का दृढ़ प्रमाण है। जाटों के इलावा दूसरी जातियों में यह प्रथा नाममात्र ही है। इसके इलावा कई गोत्रों में भाईचारा होने पर भी आपस में विवाह शादी के समय गोत्र छोड़ते है जैसे दलाल, देसवाल, मान, सिहाग, अहलावत, ओहलाण, पेहलाण, दुहन और मलिक का भी भाईचारा है। जाट तो अपने गांव की सीमा के साथ लगते गांव में शादी नहीं करते क्योंकि ये गांव तो भाईचारे में ही आ जाते हैं। कई हिन्दु जातियां केवल अपना ही गोत्र छोड़ती हैं।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से स्वतः ही ज्ञात हो जाता है कि कवेल जाट ही तो आर्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जब दोबारा आर्य समाज का प्रचार किया तो उनके साथ इस कार्य में केवल जाटों ने ही कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। प्राचीन वैदिक काल से आज तक जाटों ने ही आर्य विचारों की पालना की है अतः जाट ही सच्चे आर्य है। इनके इलावा और किसी जाति धर्म में जाटों से बड़ा आर्य कोई भी नहीं हो सकता।

विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह की याद में

– सूरजभान दहिया

भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित एक समारोह में 14 अगस्त 2022 को मैं गुड़गांव के एक स्कूल में उपस्थित था। वहां पर भारत की वैज्ञानिक यात्रा पर एक प्रदर्शनी लगी हुई थी। युवा प्रतिभा का एक अनुपम प्रदर्शन। इस संबंध में मुझे कुछ कहने को कहा गया। मैंने इस पर अपनी बात शुरू करते हुये कहा– ''भारत में आधुनिक वैज्ञानिक युग की शुरूआत का विश्व को अहसास भारत के सात वैज्ञानिकों ने कराया था। इन वैज्ञानिकों को हम "Seven Galaxies of India" का सम्मान देते हैं। यह 1930 का दशक था। ये विश्वविख्यात हमारे वैज्ञानिक थे– सर सी.वी. रमन, डा. चन्द्रशेखर सुब्रामनयम, डा. एस.एन. बोस, डा. जे.सी. बोस, डा. मेघनाद शाह, सी. रामानुजम और डा. रामधन सिंह। तकरीबन सभी छात्र प्रथम छः वैज्ञानिकों से परिचित थे, परंतु सातवें वैज्ञानिक डा. रामधन सिंह के बारे में वे बिल्कुल अनभिज्ञ थे। यह मेरे लिये थोड़ा सा दुखद अनुभव था, परंतु मुझे पता था कि इसमें छात्रों का कोई दोष नहीं है क्योंकि हमारे स्कूल पाठ्यक्रम में कृषि विज्ञान पर बिल्कुल महत्व नहीं दिया गया है। खैर मैंने छात्रों को बताया कि डा. रामधन सिंह भारत के विश्व विख्यात कृषि वैज्ञानिक थे और ये हरियाणा प्रांत के रहने वाले थे। छात्रों को इस जानकारी को पाकर गर्व की अनुभूति हुई।

डा. रामधन सिंह का जन्म 1 मई, 1891 को रोहतक जिले के किलाई गांव के एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने 1907 में राजकीय हाईस्कूल, रोहतक से दसवीं की परीक्षा पास की। इसके पश्चात उन्होंने डी.ए.वी. कालेज लाहौर से इंटर की परीक्षा पास करके पंजाब कृषि व अनुसंधान कालेज लायलपुर (अब फैसलाबाद–पाकिस्तान) से तीन साल का डिप्लोमा किया। इसके पश्चात उन्होंने इंग्लैंड में कैंब्रीज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण की। अब वे अपने आपको कृषि अनुसंधान हेतू पूर्ण समर्पित कर चुके थे।

डा. रामधन सिंह को कृषि अनुसंधान की ओर ढ़ालने का श्रेय होवार्ड दंपत्ति (Sir Albert Howard and his wife G.I.C. Howard) को जाता है। लायलपुर कालेज से डिप्लोमा करने के पश्चात डा. रामधन सिंह Imperial Agricultural and Research Institute - Pusa (बिहार) में रिसर्च असिस्टेंट के पद पर कार्यरत हो गये तथा वे होवार्ड दंपत्ति के निर्देशन में कृषि अनुसंधान में जुट गये। होवार्ड दंपत्ति गेहूं–अनुसंधान में कार्यरत था– वे रामधन सिंह की अनुसंधान में रूचि, समर्पण व प्रतिभा से अति प्रभावित थे। एक बार देर रात बारिश हो गयी तथा गेहूं का उन्नत बीज बाहर ग्राउंड में पड़ा हुआ था। यह देखकर होवार्ड दंपत्ति बीज को खराब होने से बचाने हेतु तुरंत घर से ग्राउंड की ओर भागे। उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि गेहूं का बीज पहले ही रामधन सिंह ने बोरियों में भरकर अपनी पीठ पर लादकर सुरक्षित स्थान पर रख दिया था। इस समय रामधन सिंह ने पटना विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. भी कर ली थी। होवार्ड दंपत्ति ने उन्हें कैंब्रीज विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा हेतु भिजवाया था। वहां से उन्होंने Natural Science में एम.ए. तथा Higher Diploma in Agriculture 1922 में प्राप्त किया। उन्होंने अपनी संपूर्ण शिक्षा इंग्लैंड में अपने ही साधनों द्वारा पूरी की थी।

इंग्लैंड से शिक्षा पाने के पश्चात वे कुछ समय अपने गांव में रहे। उनका विवाह बाल्यकाल में ही हो गया था– उनका एक बेटा है। यदि उनके जीवन पर नजर डाले तो यह समझा

जा सकता है कि वास्तव में वे अपनी धर्मपत्नी से विवाहित नहीं थे, वे तो कृषि अनुसंधान से विवाहित थे। वे ज्यादा समय अपनी गश्हणी के बजाय खेतों में बिताते थे। उनका दिमाग सदैव कृषि अनुसंधान में केंद्रित रहता था। उनकी सोच व प्रतिभा का दायरा आकाश से भी ऊंचा था। वे अपने Visionary Axis में इतने खो जाते थे कि वे गांव के जोहड की पाल पर घंटों–घंटों बैठकर शोध साधना में डूबे कंकरों को बार–बार पानी में फेंककर उठती लहरों में खोये रहते थे। इस प्रकार की हरकतों को देखकर उनके बारे में हुक्के पर चर्चा होने लग गई ''शंकर का बेटा रामधन बिलायत पढ़कर बावला हो गया है।'' इतनी कुशाग्र प्रतिभा एवं वैज्ञानिक प्रवश्त्ति की आत्मा भले ही आम आदमी को बावली दिखाई दे, पर ऐसी दिव्य शक्ति ही समाज कल्याण का नव इतिहास रचने के लिये इस धरती पर अवतरित होती है। और डा. रामधन सिंह ने कृषि अनुसंधान में जो अद्वितीय शोध कार्य किया उससे भारत तथा विश्व में कृषि क्रांति का श्रीगणेश हुआ। उसका कृषि शोध उन्माद जारी रहा। जोहड़ की पानी की तरंगों से उसे नयी सोच का अनुभव होता था, वह उससे न्यूटन के गति के तीसरे नियम– Action and Reaction are equal and opposite को झूठलाने के लिये आतुर हो जाता था अर्थात जो पत्थर फैंकने पर जोहड़ के पानी में तरंगों के बहाव का फैलाव होता था। उससे ज्यादा Reaction में उसे उत्साह का फैलाव मिलता था। बस यही प्रेरणा को पाकर डा. रामधन सिंह ने नव कृषि जगत में मानव को प्रवेश दे दिया।

वैज्ञानिक हमेशा बावले होते हैं, उनकी लगन उन्हें बावला बना देती है। "Imagination is more important than knowledge," Said Einstein. "Call it innovation intellectual capital. Every human endeavour starts with an idea and our ability or potential to realize our ideas makes us what we are. Innovation derives excellence in action. Wealth is measured by ideas, not by money". Dr. Ram Dhan Singh reigned supreme, because he had realized good idea.

डा. रामधन सिंह जब 1937 में प्लांट पैथोलोजिस्ट ई. सी. लार्ज द्वारा लिखित पुस्तक "Sugar From Air" पढ़ी तो उनका कहना था कि एक वैज्ञानिक के लिए ऐसा करना असंभव नही हो सकता। वातावरण में आक्सीजन है, नाईट्रोजन है, कार्बन है तथा हाईड्रोजन तो पानी में है ही तो हवा से चीनी उत्पादन करने में कोई कठिनाई नहीं आनी चाहिये। Einstein तथा डा. रामधन सिंह समकालीन थे, स्कूल में वे दोनों साधारण छात्र थे परंतु उनमें Ideas पर फतह पाने की अलौकिक क्षमता थी जिसके कारण उन्होंने विश्व के वैज्ञानिक जगत को Foundation Principles का नायाब उपहार दिया। Einstein की 'Theory of Relativity' आज वैज्ञानिकों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का रास्ता दिखला रही है जबकि डा. रामधन सिंह के Fundamentals कृषि अनुसंधान को आगे बढ़ा रहे हैं।

डा. रामधन सिंह का Vision बहुत व्यापक था। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 30 अप्रैल 2008 (यानि डा. रामधन सिंह की जयंती की पूर्व संध्या) को 'The Tribune' दैनिक समाचार पत्र के 125 वर्ष नामक पुस्तक का विमोचन करते हुये कहा था– ''भारत की कृषि में सृजनता के लिये नई सोच (New Ideas) की तरंगों की आवश्यकता का अनुभव हो रहा है। यानी डा. मनमोहन सिंह वैसी तरंगों की ओर हमारे युवाओं का ध्यान केंद्रित करना चाह रहे थे जो डा. रामधन सिंह अपने गांव के जोहड़ के पानी पर कंकर फैंककर उठाते थे और वे तरंगे उनके कृषि शोध की प्रेरणा स्रोत बन गई थी। मैं यहां एक स्पष्टीकरण देना चाहूंगा। डा. रामधन सिंह भी आइनस्टाईन हो सकते थे। Ideas को हकीकत में बदलने के लिये Environment तथा Medium की जरूरत पड़ती है। लुहार का बेटा अपने हथोड़े व अन्य यंत्रों से लोहे को ठोक पीटकर अपना जीवन शुरू करता है, किसान का बेटा खेती के कामकाज में जुड़कर अपनी जिंदगी आगे बढ़ाता है। Einstein को जो माहौल मिला, उसको आगे बढ़ाकर अपनी सोच की प्रतिभा को बलवती बनाया, इसी प्रकार डा. रामधनसिंह जिस माहौल से निकले उसी से वे कृषि दक्षता हेतु आगे निकलेः याद रहे Vacuum में कुछ नहीं हो सकता।

कृषक का बेटा रामधन बस किसान की पीड़ा को कम करने के लिये कृषि शोध में तपस्वी हो गया। 1926 से लेकर अपने जीवन के अंतिम सांसों तक (वे 17 अप्रैल 1977 को स्वर्ग लोक के लिये प्रस्थान कर गये थे) वे कृषि शोध के संत एवं योगी बने रहे। वे खेत प्राणी थे– वे बनियान व धोती में खेत प्रयोगशाला में डटे रहते थे– उन्हें न भूख सताती थी और न प्यास, न उन्हें भादवे की गर्मी परेशान करती थी और न ही पोह की सर्दी। अपनी ही धुन में मस्त– अपनी शोध के नतीजा की राह में वे अपने साथ युवा छात्राओं की टोली रखते थे, उनका घर एक प्रयोगशाला था और छात्र होस्टल भी। वे अपने विद्यार्थियों के साथ मई–जून के महीनों की शिखर–दोपहरी में जब लायलपुर में तापमान 40 डिग्री से ऊपर होता था कृषि फार्म पर शोधरत होते थे। उन्होंने फार्म की तपती भट्टी में अपने विद्यार्थियों को इतना तपाया कि वे आगे चलकर ऐसे कृषि वैज्ञानिक निखरे जिन्होंने भारत में हरित क्रांति के सूत्रपात में अपनी समर्पणता का परिचय दिया।

डा. रामधन सिंह का शोध क्षेत्र बहुत व्यापक था, उन्होंने गेहूं, चावल, जौ व दालों की अनेक उन्नत किस्में निकालीं, जिससे कृषि विकास में वृद्धि तथा किसान की आर्थिक स्थिति बेहतर होने का नया अध्याय शुरू हुआ। उनके शोध के संबंध में डा. एम.एस. स्वामीनाथन ने कहा था–

शेष पेज अगले प्रकाशन में

हरियाणा को हम जानते हैं, उसके नाम की कहानी को आइए आज जानें

– डॉ सतीश त्यागी

हमारे प्यारे भारत के जिस जमीन के टुकड़े को आप 'हरियाणा' के नाम से जानते हैं उसका राज्य के रूप में उदय केवल आधी सदी ही हुई है लेकिन हरियाणा का वजूद और हरियाणा की कहानी सदियों पुरानी है हरियाणा के लोगों को इस बात का गौरव और संतोष होना चाहिए कि सदियों के देशी–विदेशी शासन के बावजूद हरियाणा के प्राचीन नाम से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई।

ऋग्वेद के मंत्र में 'रजतं हरयाने' का उल्लेख है, जो यह सिद्ध करता है कि मेरा नामकरण वैदिक ऋषियों ने किया था। 'आर्यवर्त' का हरियाणा आज भी उसी प्राचीन नाम से ख्यात है जबकि अन्य समकालीन प्रदेश लम्बी काल यात्रा में अपना मूल नाम खो बैठे।

हरियाणा की धरती का महादेव शिव व योगेश्वर श्रीकृष्ण से गहरा व अटूट सम्बन्ध रहा है। महादेव के छोटे पुत्र कार्तिकेय ने अपने राज्य विस्तार के क्रम में हरियाणा की भूमि पर ही रोहतक में दुर्ग बनवाकर प्रवास किया था।

हरियाणा की एक प्राचीन सामाजिक व्यवस्था 'खाप' को लेकर समूचे देश में बार–बार बवाल उठते हैं और अनजाने में शहरी तबका खापों का नाम लेकर कुछ भी बोल देता है उन्हें ये पता ही नहीं है कि खाप है क्या और खाप का प्रारंभ–बिंदु कहां है ?

कार्तिकेय के बड़े भाई गणेश सेनाओं में शिक्षण–प्रशिक्षण का दायित्व निभाते थे। पांच सैनिकों की एक लाइन को 'पंक्ति' कहते थे और दो पंक्तियों को मिलाकर एक 'गण' बनता था। इस तरह गण बनाने के कारण इनका नाम गणेश पड़ा। ये गण ही भविष्य में बढ़ते–बढ़ते 'खाप' कहलाये।

महाभारत के 'सभापर्व' में कहा गया है कि राजसूर्य यज्ञ के पश्चात युधिष्ठिर ने नकुल को पश्चिम दिशा में विजय यात्रा के लिए भेजा। उस समय आज की दिल्ली का नाम खांडवप्रस्थ था जो बाद में इंद्रप्रस्थ में परिवर्तित हुआ। इंद्रप्रस्थ से आगे नकुल ने जिस क्षेत्र में प्रवेश किया, वह आज का रोहतक था। नकुल ने यहां स्थित कार्तिकेय के भवन पर चढ़ाई की। उस काल खंड में यह प्रदेश अत्यधिक सुन्दरता लिए था और धनधान्य से परिपूर्ण व गौओं से समृद्ध था।

महाभारत के सभा पर्व के अनुसार नकुल को शूरों व मत्तमयूरकों से भारी युद्ध करना पड़ा जो उस समय इस क्षेत्र में बसने वाले क्षत्रियों के वंश थे। उस समय मेरे दो भाग थे मरुभूमि और बहुधान्यक अर्थात मेरा एक भाग मरू अर्थात रेगिस्तान था और दूसरा बहुधान्यक अर्थात भारी मात्रा में अन्न उपजाने वाला इन दोनों भागों को नकुल ने जीता।

शूरों व मत्तमयूरकों के वंशज ही आगे चलकर 'यौधेय' कहलाये। इन यौधेयों के भय से ही आक्रांत होकर सिकंदर की सेनाओं ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया था और सिकंदर को हरियाणा की सीमा को छूने से पहले ही वापस लौटना पड़ा था।

यौधेय कार्तिकेय को सेनापति के रूप में मानते थे। 1935–36 में डॉक्टर बीरबल साहनी के मार्गदर्शन में रोहतक नगर की परिधि पर स्थित खोखरा कोट के खंडहरों की खुदाई से यौधेय साम्राज्य की पुष्टि हुई है। इस खुदाई में यौधेयों के सिक्के ढालने के हजारों ठप्पे मिले, जिनका समय ईसा से सौ–दो सौ साल पहले का माना गया है। इन सिक्कों पर शिवजी के वाहन नंदी को देखा जा सकता है। सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में यौधेयानां बहुधान्यके ऑकित है। तकरीबन 1500 साल पहले विदेशी कुषाणों को जीतकर यौधेयों ने जो सिक्के चलाए, उन पर कार्तिकेय अपना शस्त्र 'शक्ति' लिए खड़े हैं। उनके साथ ही उनका वाहन मोर है। ब्राह्मी लिपि में यौधेयगणस्य जय लिखा है। ये सिक्के आज भी झज्जर गुरुकुल के संग्रहालय में देखे जा सकते हैं।

कार्तिकेय के ध्वजचिन्ह 'मोर' को अंगीकार करने के कारण ही इनका नाम 'मत्तमयूरक' पड़ा था। आज भी इस चिन्ह का हरियाणा में प्रचलन है और यहा के लोग मौर के प्रति पवित्र भाव रखते हैं। हरियाणा में जो पुराने घर हैं आज भी उनपर मोर की आकृति लगी हुई आसानी से देखी जा सकती है। मुस्लिम व फिरंगी शासन काल में भी इस क्षेत्र में मोर के मारने पर कड़ा प्रतिबन्ध था। फिरंगी शासन में तो मोर का शिकार करने पर किसानों ने कई अंग्रेजों से भी टक्कर ली थी। यही मोर हमारे भारत का राष्ट्रीय पक्षी भी है।

अतीत में, आज के उत्तराखंड में स्थित हरिद्वार और समूचा वृजलोक (मथुरा) हरियाणा में ही समाये थे। आज भी बृजभूमि का एक बड़ा भाग फरीदाबाद–पलवल के रूप में बृज संस्कृति व भाषा की कहानी कहता है। हरियाणा का कुरुक्षेत्र तो महाभारत का रणक्षेत्र है ही, जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अवसाद से बाहर निकालकर धर्म की रक्षा के लिए युद्ध के लिए तत्पर किया और इसी बहाने 'गीता' जन्मी हरि (कृष्ण) का रथ (यान) मेरी भूमि पर चला, इसी तर्क पर कुछ विद्वान् 'हरियाणा' नामकरण को आधार देते हैं।

मेरे नाम की कहानी तो आपने जान ही ली अब मैं आपको हरियाणा की प्राचीनता के उस दौर में आपको लेकर चलता हूँ, जब भारत में मौर्य साम्राज्य के नाम से एक बृहद साम्राज्य अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कर रहा था। यह साम्राज्य 321 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व तक रहा। अपने समय

में यह दुनिया का सबसे बड़ा साम्राज्य था। चाणक्य के मार्गदर्शन में नंद वंश को मटियामेट कर चन्द्रगुप्त मौर्य इस साम्राज्य के पहले राजा बने। उन्होंने सिन्धु के पार के क्षेत्रों जो मेसिडोनिया के अधीन थे, को भी जीत लिया था। चन्द्रगुप्त के बाद बिन्दुसार और फिर उसके पुत्र अशोक महान ने साम्राज्य का नेतृत्व किया। पांच–छः करोड़ की आबादी वाले इस साम्राज्य का हरियाणा भी हिस्सा रहा था, ऐसा टोपरा (अम्बाला) व हिसार में पुरातत्व विभाग की खोजें, अशोक– कालीन स्तंभों, चनेती व थानेसर से प्राप्त स्तूपों के आधार पर प्रमाणित होता है। मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद बक्ट्रियन ग्रीक्स, पार्थियन, सीथियन व कुषाण सरीखे विदेशी लोगों ने भारत पर आक्रमण किये। कुषाण को यौधेयों ने सतलुज व यमुना के बीच के इलाके से बाहर खदेड़ा और अपना शासन स्थापित किया। यौधेयों की राजधानी रोहतक थी और शासन पद्दति के रूप में उन्होंने कुलीनतंत्र जैसा गणतंत्र अपनाया हुआ था। ईसा से 150 वर्ष पूर्व से लेकर 350 ईसवी तक यौधेयों ने शासन किया। उनका राज्य एक और उत्तरप्रदेश की सीमा को स्पर्श करता था तो दूसरी ओर राजस्थान की सीमा को इलाहाबाद स्थित अशोक स्तंभों के अभिलेखों के अनुसार यौधेय गुप्त शासक समुद्र गुप्त को नज़राना देते थे।

सातवीं शताब्दी में हरियाणा राजा हर्षवर्धन के साम्राज्य का महत्वपूर्ण हिस्सा था और इसकी राजधानी थानेसर में थी चीनी यात्री ह्वेनसांग राजा हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत की यात्रा पर आया था और हर्षवर्धन के आग्रह पर उसने उसके राज्य में आठ वर्ष (635–643 ईसवी) तक प्रवास किया।

ह्वेनसांग ने अपनी इस अध्ययन यात्रा के दौरान जो देखा व समझा उसे विधिवत कागजों में दर्ज किया। उसने लिखा कि यह राज्य व्यापार व उद्योग के लिहाज़ से काफी उन्नत व समृद्ध था। हर्षवर्धन के साम्राज्य के विघटन के बाद भी हरियाणा प्रगति मार्ग पर बढ़ता रहा। पिहोवा के अभिलेख सूचित करते हैं कि आठवीं– नौवी सदी में हरियाणा गुर्जर प्रतिहार वंश के साम्राज्य का हिस्सा रहा और उसके बाद, उस अनंगपाल तोमर के राज्य का हिस्सा, जिसने दिल्ली शहर की स्थापना की थी।

सन् 1192 में अफगान हमलावर मौहम्मद गौरी के हाथों हुई पृथ्वीराज चौहान की पराजय ने हरियाणा के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की जिससे अगले 600 वर्षों तक न केवल हरियाणा अपितु भारत के इतिहास की ही तस्वीर बदल गयी। इन छः सौ वर्षों में 1206 से 1526 तक दिल्ली सल्तनत का राज कायम रहा जिसमें 1206 से 1290 तक मामलुक वंश, 1290 से 1320 तक खिलजी वंश, 1320 से 1414 तक तुगलक वंश, 1414 से 1451 तक सईद वंश और 1451 से 1526 तक लोधी वंश का शासन रहा। 1206 में स्थापित दिल्ली सल्तनत असल में मुस्लिम शासन न होकर 'तुर्की राज' था क्योंकि इस दौर में दिल्ली सल्तनत के बादशाहों ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों के साथ भी भेदभावपूर्ण व्यवहार किया, उन्हें ऊंचे प्रशासनिक पदों से हटा दिया गया।

हिन्दुओं की अपेक्षा भारतीय मुसलमानों को तरजीह तो दी गयी लेकिन शासन का वास्तविक नियंत्रण तुर्की मूल के सैनिक अफसरों के हाथों में था। सल्तनत राज के दौरान ही 1398 में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया। तैमूर भारत पर राज करने के मक़सद से नहीं आया था, उसका मकसद हिंदुस्तान की दौलत लूटना था। वह हिंदुस्तान की धरती पर लगभग एक साल ही रहा और इस एक साल की अवधि में से उसने एक महीना हरियाणा में भी रहकर उत्पात मचाया लेकिन हरियाणा के बहादुर लोगों ने उस आततायी को जमकर टक्कर दी।

मुगल साम्राज्य (1526–1857) के दौरान पानीपत में लड़े गए तीन युद्धों (1526,1556 व 1761) ने हरियाणा को भारत के इतिहास में एक खास मक़ाम दे दिया। महाभारत काल में 'कुरुक्षेत्र' और आधुनिक काल में 'पानीपत' के ऐतिहासिक युद्धों ने हरियाणा को 'भारत के युद्धस्थल' में ही तब्दील कर दिया। पानीपत की नवम्बर 1556 में हुई दूसरी लड़ाई में तो रेवाड़ी के हेमू, जो कालान्तर में हेमचन्द्र विक्रमादित्य नाम से ख्यात हुए और जिनकी गिनती उस दौर के महानतम सेनापतियों में होती थी, ने अकबर की सेनाओं के छक्के छुड़ा दिए थे, भले ही युद्ध अकबर की सेना ने जीता हो। लेकिन इस युद्ध से पहले हेमू इसी साल फरवरी महीने में दिल्ली की जंग में अकबर की सेना को धूल चटाकर दिल्ली पर कब्ता कर चुके थे। जिस तरह बाबर राणा सांगा से डरता था, उसी तरह अकबर भी हेमू से भय खाता था।

अकबर के 49 साल के शासन (1556–1605) के बाद उसके बेटे जहाँगीर और पोते शाहजहां ने क्रमशः 22 व 31 साल तक गद्दी संभाली और इसके बाद औरंगजेब ने 49 सालों तक हिंदुस्तान पर राज किया। अकबर और औरंगजेब का शासन समय–अवधि की दृष्टि से तो बराबर रहा लेकिन औरंगजेब धार्मिक कट्टरता के चलते आम जनता में अलोकप्रिय रहा। उसकी दमनकारी नीतियों का खामयाजा हरियाणा के लोगों को भी भुगतना पड़ा। 1707 में औरंगजेब की मौत के बाद से मुगल साम्राज्य दरकना शुरू हो गया।

हरियाणा आंगन में हुए पानीपत के तीन युद्धों के विषय में तो लोगों को काफ़ी जानकारी है लेकिन 1739 में करनाल में हुई लड़ाई के बारे में अपेक्षाकृत कम पता है। यह युद्ध मुग़ल बादशाह मुहम्मद शाह व नादिरशाह के बीच हुआ। युद्ध में फ़तेह हासिल कर ईरानी लुटेरे नादिर शाह ने मुगल सम्राट द्वारा शासित काबुल कंधार प्रदेश पर अधिकार कर

लिया। नादिरशाह ने दिल्ली पहुंचकर जमकर लूटपाट ही नहीं कि बल्कि बड़े पैमाने पर नरसंहार भी किया। नादिरशाह के हमले के बाद दिल्ली और आसपास का इलाक़ा लुटेरों की सैरगाह बन गया। नतीजतन लोगों को बेहद बुरे और तकलीफ़देह दिनों का सामना करना पड़ा। मराठों और अफ़ग़ानों के लूटपाट के सिलसिले के क्रम में अठारहवीं सदी के मध्य में यह इलाक़ा सिखों, रोहिल्ला सरदारों व विदेशी लुटेरों की लूटपाट का केंद्र बना रहा। वस्तुतः पानीपत की तीसरी लड़ाई से भी हरियाणा के लोगों का भाग्य तय नहीं हुआ था। हालांकि मराठे नरम पड़ चुके थे और अपनी रिटायर हो गए थे लेकिन हरियाणा के नए दावेदार मसलन जाट, सिख, रोहिल्ला, मराठा व फिरंगी आपसी प्रतिद्वंदिता तथा संघर्ष में संलग्न रहे।

1761 को शुरुआत में ही अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली और उससे सटे हरियाणवी इलाके में ढाई महीने तक जमकर लूट–पाट का तांडव किया और जब वह 20 मार्च 1761 को यहा से गया तो उसने नजीब–उद–दुआला को दिल्ली का शासक नियुक्त कर दिया और उसे दक्षिणी हरियाणा (पानीपत तक) का राज सौंप दिया। सरहिंद के गवर्नर जैन खान को उसने उत्तरी हरियाणा का हिस्सा, जिसमें करनाल, थानेसर, अम्बाला और जींद जिले शामिल थे, सौंप दिया।

हरियाणा का शेष भू–भाग मुगल साम्राज्य के अधीन रहा। यधपि, अब्दाली ने शाह आलम को मुगल बादशाह, इमाद उल–दुआला को वजीर और नजीब–उद–दुआला को मीर बख्शी मान लिया था तथापि 1761 से 1770 तक असल में नादिरशाह ही शासक था।

राजर्षि राजा महेन्द्र प्रताप का अनन्य राष्ट्र-प्रेम

– डॉ० विद्यालंकार

राजा महेन्द्र प्रताप जी का जन्म 1 दिसम्बर 1886 ईस्वी को मुरसान के राजा घनश्याम सिंह के महल में हुआ था। लेकिन बाद में वे हाथरस के राजा हरनारायण सिहँ के दत्तक पुत्र बनकर वहीं चले गये थे। उनकी आरम्भिक शिक्षा राजकीय विद्यालय अलीगढ में सम्पन्न हुई थी। कॉलेज की शिक्षा एम.ए,ओ. कॉलेज अलीगढ में हुई जोकि बाद में मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ बन गया था। एम.ओ. कॉलेज की स्थापना में उनके पिता राजा हरनारायण सिहँ ने भी सर सैय्यद अहमद साहब को खुलकर सहयोग किया था। इसीलिए सर सैय्यद छात्र महेन्द्र प्रताप को अपने पुत्र की भाँति प्रेम करते थे। ऐसा राजा साहब ने श्अपनी पुस्तक में लिखा है। वहीं रहकर उनमें नेतृत्व के गुण जागे थे। राजा गुलाम हुसैन के साथ मिलकर यहीं पर उन्होंने छात्रावास की सुव्यवस्था हेतु प्रथम हडताल की थी।

1895 ईस्वी में राजा हरनांरायणसिंह का स्वर्गवास होने से आपके सिर से पिता की छत्रछाया उठ गई थी। ऊपर से कुल 10 वर्ष की बाल वय में ही आपके ऊपर हाथरस रियासत का राज्यसभा का गुरुतर दायित्व आ गया था। 1906 से लेकर 1914 तक जब तक आप स्वदेश में स्वतन्त्र शासक रहे, आपने अपनी प्रजा को भवन–निर्माण हेतु भूमि दान में दीं। भू–व्यवस्था को सुचारू बनाया। देहरादून में महलों का निर्माण किया और वृन्दावन के अपने पाँच सौ बीघे के बाग को गुरुकुल वृन्दावन को भेंट किया जोकि आगे चलकर गुरुकुल विश्वविद्यालय बना। लेकिन आप परम्परागत शिक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे, अत्तएव आने 1909 ईस्वी में प्रेम)तकनीकी) महाविद्यालय की आधारशिला अपने पुत्र जन्मोत्सव के रूप में रखी थी।

ख. स्वाधीनता संग्राम से जुड़ाव

इस संस्था के सुचारु संचालन के लिए आने छ लाख रूपयें की सम्पत्ति का संचित ट्रस्ट बना दिया था। इस महाविद्यालय का नामकरण राजा साहब ने अपने भावी पुत्र प्रेम प्रताप के नाम से ही किया था। इसमें औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की सर्वप्रथम प्रस्थाना की गई। इस विद्यालय की स्थापना के अवसर पर पण्डित मदन मोहन मालवीय जी भी पधारे थे। यहाँ पर सम्पंपूर्णानन्द जी जैसे महामनस्वी व्यक्ति ने अध्यापन का भी पुनीत कार्य किया था जोकि बाद में गोबिन्द बल्लभ पन्त के पश्चात उत्तरप्रदेश की सरकार के दूसरे मुख्यमंत्री बने थे। हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस की स्थापना के समय भी राजा साहब ने मुक्त हस्त से आर्थिक अनुदान दिया था। इसीलिए मालवीय जी ने उनको विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी में भी सम्मानित सदस्य बनाया था।

इसी अन्तराल में राजा महेन्द्रप्रताप सिहँ अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्वाधीनता संघर्ष से प्रभावित होकर उससे भी जुड गये थे। आपने 1910 ईस्वी में इलाहाबाद में प्रयाग के त्रिवेणी संगम स्थल पर होने वाले उसके राष्ट्रीय (वार्षिक) अधिवेशन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था और वहीं पर अखिल भारतीय शिक्षा–सम्मेलन का संयोजकत्व भी किया था। उनकी इन राष्ट्रवादी गतिविधियों से राजभक्त राजा जींद जोकि उनके साले थे, उन्होंने भी उनसे अपने सामाजिक सम्बन्ध समेटने की चेतावनी उन्हें दी थी। लेकिन राजा साहब तो धुन के धनी थे। वे बाद में कांग्रेस के कलकत्ता–अधिवेशन में भी पहुँच गये थे। इस प्रकार से उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय सहभागिता निभाकर अपने पारिवारिक सम्बन्धों को भी तिलाज्जलि दे डाली थी। ऐसे अनन्य राष्ट्र भक्त थे राजा महेन्द्र प्रताप।

ग. अछूतोद्धार का कार्य

राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के साथ ही साथ राजा साहब समाज–सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमों में भी अग्रणी रहे। उन्होंने 1910–11 ईस्बी में ही भारत वर्ष के भिन्न–भिन्न स्थानों पर जाकर दलितोत्थान का कार्य उनके साथ सहभोज और प्रीतिभोज रचाकर किया। यथा,

अल्मोडा (उत्तराखंड) में एक अछूत परिवार में अन्न ग्रहण किया तो बडौदा (गुजरात) में दलितों को मन्दिर के दुर्ग द्वार में पावन प्रवेश कराया था। जो देवद्वार उनके लिए सदियों से अवरुद्ध थे, उनके कठोर कचार उन्होंने अपने उग्र आन्दोलन से खोल दिये थे। यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि महात्मा गाँधी तब तक दक्षिण अफीका में रंगभेद के संघर्ष में ही व्यस्त थे। तो भीमराव अम्बेदकर तब तक शैशवास्था में अध्ययन रत ही थे। अतएब दलितोत्थान कार्यक्रमों के वही प्रथम प्रस्तोता थे।

इसके बाद राजा साहब सपरिवार यूरोप की यात्र पर निकल गये थे। वहाँ पर वे भारतीय धर्म और दर्शन पर व्याख्यान भी देते रहे थें। अमेरिका में जब वे गीता–माता पर सारगर्भित भाषण देकर हॉल से बाहर निकले थे, तो एक अमेरिकी नागरिक ने यह कट टिप्पणी की थी– "इतना उच्चकोटि का तत्त्व ज्ञान भी भारत को गुलामी से नहीं बचा सका?" बस उसी दिन भारत में वापिस लौटकर उन ज्ञानग्रंथों को उन्होंने जमना–मैया की अविरल धारा को समर्पित कर दिया था और राष्ट्र–भक्ति का सबल संकल्प किया था। इसीलिए उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय जनजागरण का पुनीत पुरोगम बनाया था। 'प्रेम' नामक पत्र का प्रकाशन इसी उद्देश्य से किया गया था। इसी पत्र में प्रकाशित उनके अग्रलेख 'इण्डिया का रोना' ने बिट्रिश शासन की चूलें हिलाकर रख दी थी। क्योंकि इसमें राजा साहब ने भारत के जनमन की दीन दशा का मार्मिक चित्रण आक्रोश पूर्वक किया था।

घ. प्रेम महाविद्यालय की स्थापना

स्वदेश लोटकर जहाँ पर पत्र–पत्रिकाओं में अपने ओजस्वी उद्‌गार व्यक्त करके राजा साहब ने जन–जागरण का पावन कार्य किया था, वहीं पर समाज–सुधार के रचनात्मक कार्यक्रमों में भी वे कब पश्चात पद रहने वाले थे। आगरा जोकि उनकी कर्मभूमि भी थी, वहाँ पर आकर उन्होंने अछूतोद्धार का कार्यक्रम और भी उमग्रता के साथ आरम्भ किया था। जिसके कारण उन्हें पोंगा–पंथी धर्मध्वजी लोगों ने अंग–भंग तक करने की धमकियाँ दी थी, लेकिन वे अपने व्रत संकल्प से कब पीछे हटने वाले थे। अन्त में पं" मदन मोहन मालवीय के सशक्त हस्तक्षेप से उन्होंने अपना उम्र–आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया था। लेकिन वे अहिंसक आन्दोलनों के ही पक्षधर थे। जब 1912 ईस्वी में हार्डिंग बम्ब–कांड दिल्ली में हुआ था तो उन्होंने भी महात्मा गाँधी कीं भाँति अहिंसक आन्दोलन की आलोचना की थी। क्योंकि यह सब उनके प्रेम–धर्म के विरूद्ध कार्य कलाप था। इसी अन्तराल में 1913 ईस्वी में उनके घर में उस पुत्र प्रेम प्रताप ने भी कायिक कलेवर धारण कर लिया था, जिसके अर्मूत स्वरूप की कल्पना उन्होंने प्रेम महाविद्यालय को साकार रूप देकर की थी।

पुत्र जन्मोत्सत के अवसर पर ही उन्होंने अछूतोद्धार के कार्यक्रम को बैचारिक धार देने की गर्ज से ही देहरादून से 'निर्बल सेवक' नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया, जिसकी अनूगूज आगे चलकर महात्मा गाँधी द्वारा सम्पादित 'हरिजन' पत्र में दिखाई दी थी। 1914 ईस्वी में प्रथम विश्व युद्ध का आरम्भ हो गया था। युद्ध के काले कजरारे घने मेघ विश्वक्षितिज पर मंडराने लगे थे। ऐसी स्थिति में विश्व को वे इस महाविनाश से बचाये रखना चाहते थे। लेकिन सर्वप्रथम स्वदेश की स्वतन्त्रता उनके लिए सर्वोपरि थी। इसी दौरान 1914ईस्वी में प्रेममहाविद्यालय का वार्षिक पुरुष्कार–वितरण का समारोह भी आ गया था। जिसमें अंग्रेज आयुक्त (कमिश्नर) मुख्यातिथि के रूप में आहूत थे। राजा साहब अपनी राष्ट्रधुन में आकर अपने भाषण में अंग्रेजी सरकार की ही धुनाई कर बैठे। "अंग्रेज सरकार भारत से शन्नुवत् व्यवहार कर रही है,श उनके ये शब्द आयुक्त को अखर गये थे।

ड़ सर्वस्व त्याग और विदेश गमनः

राजा साहब द्वारा सम्पादित 'प्रेम' और 'निर्बल सेवक' जैसे प्रखर पत्र तो पहले ही अंग्रेजों के विरूद्ध आग उगल रहे थे। स्वयं को एक जनतांत्रिक सरकार दिखाने के लिए अब तक उन्होंने उन पर प्रंतिबन्ध नहीं लगाया था, कानूनी रूप से। लेकिन आज तो हद ही हो गई थी। राजा साहब ने सिहँ के सम्मुख ही उसके मुख में हाथ डालकर उसके दाँत गिनने आरम्भ कर दिये थे। अतएवं विदेशी सरकार ने उनकी इन सरकार विरोधी गतिविधियों को भाँपकर उनको राजद्रोही विधिवत् रूप से घोषित कर दिया था और उनकी गिरफ्तारी के वारन्ट भी जारी कर दिये थे। अब उनके सामने दो ही रास्ते थे। प्रथम बन्दी बनकर आजीवन कारागार में समय यापन और दूसरा विदेश गमन करके राष्ट्र मुक्ति का सबल समर्थन और प्रबल प्रयास किया जाये। सिहँ कहीं पिंजरे के सीखचों में बँधकर रहते हैं। राजा साहब ने दूसरे संघर्ष पथ यानि अग्निपथ का ही वरणीय वरण किया था।

अतएव 20 दिसम्बर, 1914 ईस्वी में ही उन्होंने राजा राम की भाँति राजपाट और सारे राजसी वैभव–विलासों का परित्याग कर दिया था और बनवासी राम की भाँति अनजाने और अनदेखे विदेशी कंटक पथ की ओर पाद–प्रवेश किया था। उन्होंने मासेल्स से अपनी समुद्र–यात्रा आरम्भ की थी। फिर वहाँ से वे स्विट जर(ट) लैंड में स्थल मार्ग से पहुँचे थे। वहीं पर उनकी भेंट महान प्रवासी क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा और गदर पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक लाला हरदयाल से हुई थी। बीरेन्द्र भट्टाचार्य जोकि सरोजिनी नायडू के सहोदर थे, उनसे जेनेवा मे मिलकर राजा महेन्द्र प्रताप के आगामी स्वाधीनता संघर्ष की कार्य योजना बनाई थी। वहीं से वे जर्मनी कूच कर गये थे। जर्मनी के शासक विलियम कैसर द्वितीय से भेंट करके उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम की रूपरेखा बनाई थी, जर्मनी के कैसर ने उन्हें 26 राष्ट्राध्यक्षों के समर्थन–पत्र उपलब्ध कराये थे।

च. आजाद हिन्द सरकार की स्थापना

यह राजा साहब और उनके संघर्ष सन्नद्ध सहयोगियों की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। क्योंकि 26 देशों के नैतिक समर्थक से उनके

राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष को विश्व स्तर पर एक पहचान जो मिल गई थी। 1915 ईस्वी के अप्रैल माह में ही आपने काबुल की ओर अपना काफिला हाँक दिया था। वहीं से एक बार पुनः तुर्की के मार्ग से रोमानिया में बुद्धापेस्ट (बुद्धप्रस्थ) तक गये और अपने स्वतन्त्रता संघर्ष का शंखनाद उन देशों में भी किया। अक्टूबर तक वापिस अफगानिस्तान में लौटकर वहाँ के बादशाह अमीर हबीबुल्ला से भारत की दासता के उन्मूलन के लिए उन्होंने गंभीर चिन्तन–मन्थन किया था इसी समुद्र–मन्थन से श आजाद हिन्द सरकारश रूपी अमृत निकला था, जोकि भारत की अपनी सर्वप्रथम स्वदेशी परन्तु निर्वासित सरकार थी। जिसके राष्ट्रपति राजा साहब स्वयं सर्वसम्मति से बने थे। भोपाल के नबावजादे बरक्तुल्ला खाँ को उसका प्रथम प्रधानमंत्री(मुख्य सचिव) नियुक्त किया गया था। इस सरकार ने अपने 22 राजदूतों की नियुक्तियाँ भी भिन्न–भिन देशों में की थी।

जैसे ही यह समाचार भारतीय और विदेशी पत्रों में प्रकाशित हुआ था तो यह खबर सारे ही संसार में जंगल की आग की भाँति फैल गई थी। अंग्रेज सरकार की तो यह स्थिति कि 'काटो तो खून नहीं' था। ऐसी स्थिति में उसने प्रतिशोध की प्रचण्ड आग में जलकर राजा साहब की सारी चल और अचल सम्पदा जब्त कर ली थी। यही क्यों, उनके सिर पर एक बड़े इनाम की भी अधिघोषणा भी कर दी थी। लेकिन राजा साहब इस सबकी परवाह के वाले कहाँ थे। क्योंकि बे तो देश त्याग से पूर्व ही अपना सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित कर चुके थे। अपनी समग्र सम्पदा या तो उन्होंने स्वदेशी संस्थाओं को दान में दे दी थीय या फिर उसके न्यास(ट्रस्ट) बना दिये थे, जिनको विधि विधान के अनुसार अंग्रेज सरकार हस्तगत नहीं कर सकती थी। सम्राट हर्षवर्धन की भाँति अपना सर्वस्व दान करके ही तो बे त्यागमूर्ति और राजर्षि जैसे विशेषणों से विभूषित किये गये थे।

छ. रूस की क्रान्ति–यात्रा

राजा साहब की "आजाद हिन्द सरकार"" को रूस जैसे महादेश को पछाड़ कर एशिया का सिहँ कहलाने वाले जापान ने भी अपनी मान्यता दे दी थी। उधर यूरोप जिस जर्मनी की भीषण हुँकारों से कम्पायमान था, उसने भी इसको अधिमान्य कर लिया था। लेकिन चीन स्वयं साम्राज्यवादी शिंकजे में जकड़ा होने के कारण उसे अपना सबल समर्थन देने में समर्थ नहीं था। रूस के जार से भी मिलने का प्रयत्म आजाद हिन्द सरकार के निर्वाचित प्रथम राष्ट्रपति के रूप में राजा साहब ने किया था। लेकिन जार अंग्रेजी साप्राज्यवाद का ही अन्ध समर्थक था। 1917 ईस्वी में जब रूस में महान् सोवियत या कम्युनिष्ट क्रान्ति सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई थी, तभी पैट्रोगाड में जाकर राजा साहब ने ट्राटस्की और क्रान्ति के महानायक लेनिन से भेंट की थी। उन्होंने उन्हें उनके मिशन में अपने सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया था लेकिन उन्हें किसानों और मजदूरों को संगठित करने का सद्परामर्श भी दिया था। क्योंकि रूस की क्रान्ति के अगिया बेताल यही श्रमिक सिंह बने थे।

अब 1918 का वर्ष आ गया था। मार्च का महीना था, बसन्त की बहार थी, ऐसी मनभावन ऋतु में ही उन्होंने एक बार पुनः शीत प्रधान देश जर्मन की क्रान्ति–यात्रा की थी। वहाँ पर जर्मन सम्राट् ने उनका एक राष्ट्राध्यक्ष के नाते से भव्य स्वागत–सत्कार किया था और संभावी स्वतन्त्रता–संग्राम के लिए अपने सक्रिय सहकार का भी भरोसा दिलवाया था। जर्मनी के सम्राट् ने उनको इस अवसर पर 25 हजार मार्क की आर्थिक सहायता भी सरकार संचालन के लिए प्रदान को थी। लाला हरदयाल को भी वहीं से अर्थ सहाय्य मिल रहा था। इसी यात्रा–पथ के दौरान उन्होंने तुर्की के नवोदित परन्तु प्रगतिशील शासक कमाल पाशा से भी मेल–मिलाप किया था, जिसने अरब जगत् की मध्यकालीन मानसिकता वाली खिलाफत या खलीफाओं (धर्मगुरूओं) वाली शासन–व्यवस्था का सदैव के लिए अन्त कर दिया था। उसने भी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का समर्थन किया था।

ज. स्वदेशानुराग की पराकाष्ठा

1919 में अफगानिस्तान के अमीर अबीबुल्लाह की आकस्मिक मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर राजा साहब पुनः वहीं पर लौट आये थे, क्योंकि वहीं पर उनकी अपनी 'आजाद–हिन्द सरकार' का मुख्यालय भी था, उसी वर्ष मई मास में उन्होंने पुनः अपने प्रतिनिधि मण्डल के संग–साथ जाकर क्रेमलिन(रूस) में कम्युनिष्ट क्रांति के महान योद्धा लेनिन से पुनय भेंट की थी। उनको अपनी प्रेम–धर्म सम्बन्धी पुस्तक भी भेंट की थी, इस अवसर पर। तब लेनिन ने उनको दूसरा टालस्टाय बताया था। डॉ० मथुरा सिंह जोकि तत्कालीन राजदूत उनकी आजाद सिहँ सरकार के राजदूत रूस में थे, उन्हीं के भागीरथ प्रयत्नों से दो महान क्रान्तिकारियों की यह मुलाकात संभव हुई थी। अफगानिस्तान का अमीर अब अमानुल्ला खाँ बन गया था। उसका भी सक्रिय समर्थन और सहयोग राजा साहब को सतत भाव से मिल रहा था। वे एक बार पुनः क्रेमलिन जाकर लेनिन से मिलना चाहते थे लेकिन तब तक ब्रिट्रिश सरकार के हाथ सोवियत संघ से एक 'युद्ध–सन्धि' के माध्यम से मिल चुके थे। अतएव उन्हें अपनी यह रूस–यात्रा अधबीच में ही छोडनी पडी थी। वहीं पर जाकर राजा साहब इस बार गंभीर रूप से रूग्ण हो गये थे, अतएवं उनके सहयात्री बरकतुल्ला ने उनको स्वदेश लौटने की सलाह दी थी, लेकिन उस भीषणक्रती व्यक्ति ने उसके अनुसना कर दिया। परन्तु मृत्यु को साक्षात् सम्मुख खड़ी देखक उन्होंने अपने गोपनीय दस्तावेजों को अग्नि–समाधि भी दे डाली थी। जिनेवा में ही इनके भ्राता बलदेव सिंह ने उनको रोग शैय्या पर मरणासन्न अवलोक कर स्वदेश गमन का स्नेहिल आग्रह किया था परन्तु राजा साहब ने उस प्रेमाग्रह को भी ठुकरा दिया था। उनकी रूग्णता का समाचार सुनकर जींद नरेश रणधीर सिहँ जोकि उनके साले थे, उन्होंने भी उनसे परदेश त्याग और क्रान्तिक्रम से विरत रहने का परामर्श देना चाहा था, लेकिन राष्ट्राभिमानी महेन्द्र प्रताप ने उससे मिलना तक उचित नहीं समझा था। यह उनकी राष्ट्रभक्ति की प्रबल परीक्षा और चरम पराकाष्ठा भी थी। उनका जीवन लक्ष्य वाक्य था– ध्येयं साध्यामि वा देहं पातिश्यामि। था तो ध्येय–सिद्धि अथवा देहमुक्ति।

A VERY BRAVE GIRL---BINA DAS

- R.N. MALIK

Bengal was a very big province of India in 1900 A.D. Present Bihar, Jharkhand, Orissa, Assam and Bangladesh were parts of this province at that time.. Lord Curzon (1901-06) was the Viceroy of India during that turbulent period. He decided to bifurcate this province into two parts for the sake of administrative convenience and efficiency. Curzon always despised political activism in India. So he committed a blunder by not taking Bengal leaders into confidence before he bifurcated the province into east and west Bengals in September 1905. People of Bengal felt otherwise and opined that bifurcation was being carried out deliberately and mischievously to divide and destroy their composite culture, brotherhood and unity as part of a bigger. sinister game of 'Divide and Rule' policy.

Surendranath Bannerji and Bipinchanra Pal initiated a nonviolent movement against the bifurcation decision. They were joined by Lokmanya Tilak, Lala Lajpatrai, Annie Besant and other leaders like Pt. Madan Mohan Malviya. Very soon, the movement became the National Swadeshi Movement. The main thrust was to boycott the use of all the British products being brought from England and dumped into Indian market. People made a bonfire of all the British cloth kept in the shops. The police used all possible repressive and brutal measures to beat the movement but failed. The boycott of the cloth put lot of pressure on the cloth manufacturing factories in England and their representatives pressurized the British government to revoke the bifurcation order and the two Bengals were united in 1911.

The brutal and tyrannical measures adopted by the police and the judiciary to deal with the Satyagrahis stoked the fire of revolutionary spirit among youths of Bengal. A revolutionary outfit was created by Aurobindo Ghosh and his brother Brinda Ghosh to avenge the brutalities of these organizations. For example, there was a district judge Kingsford. He used to order flogging alongwith rigorous imprisonment to punish the people who took part in the unification movement. There was a very young boy Susheel Sen. He hit a police officer on his chin when he was being manhandled. The boy was produced before the judge. He could not be imprisoned because of his being under age and consequently the judge ordered to cane him 15 times. The police inspector hit the boy with cane 15 times with utmost severity and the boy cried Bande-Matram at each beating. The revolutionary movement of youths spread its tentacles throughout the country with the passage of time. Accordingly, more evolutionary outfits were set up in other provinces and this process continued till 1935. In fact, Bengal became the nursery of very young revolutionaries. 900 young boys were in jails in 1931. An outfit called Jugantar led by Bagha Jatin produced the maximum numbers of young revolutionaries who were responsible for murdering tyrant police officers and judges in Bengal.

Large number of young boys and girls started joining these groups. All of them were writhing in anger to avenge the humiliating treatment of youths at the hands of police and judiciary during peaceful agitations and also to get the country rid of the Britishers ruling the country. The thought that few thousand Britishers were ruling a country that stretchad from Afghanistan to Burma was constantly troubling their minds. Accordingly, they were ready to make any sacrifice for the fulfillment of these two objectives. On the other hand, first Lokmanya Tilak and then Mahatma Gandhi were pleading with the youths to desist from violent activities and adopt the path of nonviolent or passive resistance but this advice never had any impact on their raw nationalism. They believed in the gospel of Bhagvat Geeta that fighting for the cause of righteousness was an act of Dharma and a sure way of attaining Moksha and the death at the gallows was an act of great bravery and honour for them. Administration too could go to any extent to punish the people who took part in any form of agitation.

The police was also acting under strict directions by the higher authorities to take effective steps to nip the evil of agitational tendencies of the people in the bud. These steps were nothing short of brutality and barbarism That is why Subhash was mercilessly beaten twice by the police, once while he was in jail in 1930 and again while taking out a procession on 26th January 1931. Both Subhash and Tilak were lodged in Manaday jail because Government always feared that the two leaders had the potential and capability to arouse the nationalistic fervour among the people to throw the Britishers out of India.

Willingdon was the most tyrant Viceroy of India. He ruled India from 1931 to 1936 after taking over from Irwin. He had declared that he was going to finish Congress and make India virtually a Congress Mukt Bharat. He also remarked that Irwin was a simple man and Gandhi exploited his simplicity. In fact, Irwin was a very cunning person who exploited the simplicity of Mahatma Gandhi. The police, under his directions, treated all the Satyagrahis of Dandi March very brutally in March 1930. Behavior of police (all Indians under five British officers) at Dharsana Salt Depot was the most barbaric act that shook the conscience of the whole world except the British political class.

Because of the great Depression in 1929, the price of agricultural produce had fallen by 75 percent. Farmers were unable to pay the land tax. They demanded remission. The government refused point blank. So they started the No-tax campaign in U.P. and Panjab. The government started treating them very rudely and harshly by confiscating their lands and cattle. Gandhi Ji returned from England on 28th December 1931. Sardar Patel explained him the brutal behaviour of the Viceroy. Jawaharlal and Khan Abdul Gaffar Khan had already been arrested. Gandhi Ji did not want a fight and asked for an appointment with the Viceroy telling that people of India would not tolerate government sponsored terrorism. He was refused the appointment and, in turn, he and Sardar Patel were arrested on 4th January 1932. Congress Party launched the Civil Disobedience Movement. The government launched a crackdown. People again filled the jails in far greater number than during the preceding Salt Satyagraha just two years before. Police beat the Satyagrahis mercilessly with lathis. Even Sawroop Rani aged 64, mother of Jawaharlal Nehru, was not spared. A policeman hit her on her head and she fell down and became unconscious. She was taken to her home and then treated. A rumour spread that she had been killed and people gathered at Anand Bhawan in large numbers. There was police firing and two persons were killed. Such repressive environment prevailed in 1932. Muslim farmers were also part of the No-tax campaign but Muslim League did not take part in the Movement. Ambedkar, Unionist Party of Sir Fazli Hussain in Panjab and Hindu Mahasabha too abstained. The story of Brave Girl Bina Das starts from now in the suffocating and repressive environment prevailing in the country.

Beni Madhav Das was the headmaster of a good school in Cuttack. His family consisted of his wife Sarla Devi and two daughters Kalyani and Bina. Kalyani was born in 1907 and Bina four years later. Madhavdas had been once transferred overnight as a penalty for spreading feelings of treason among his students. Subhash Bose had

also been his student in his formative years. Sarladevi too was engaged in big social projects. Consequently genes of overflowing nationalism were ingrained in the blood of both the sisters and more so in case of Bina. After passing her Higher Secondary examination with laurells, Bina took admission in the Bethule college Calcutta where her elder sister Kalyani was pursuing her post-graduate studies. During her studentship in college, Bina was always overburdened by two thoughts. Firstly, the brutal behavior of police and judicial officers towards Satyagrahis and other freedom fighters and secondly only few thousand Britishers were ruling a vast country of 330 million people. Accordingly, she was etching for doing something to spread mass awakening among Indians at this tender age. Kamla Das was the warden of the girls hostel in the college. She had been the class fellow of Kalyani, the elder sister of Bina. Kamla too was a revolutionary. She had joined the secret revolutionary organization Jugantar that had produced largest number of revolutionaries in Bengal since 1905. Her duty was to arrange and supply arms to the revolutionaries.

Bina was now an adolescent girl and able to understand the importance and progress of the Freedom Movement with a clear vision. Bengal always led other provinces in spearheading the Freedom Movements. Many girls in the Bethune college had formed an Association to take part in the Freedom Movement more aggressively. Bina was one of them. She was shy, sober, emotional and a little reckless girl. With the passage of time in college life, Bina realized that grinding poverty of Indians could be banished only if the Britishers were banished from India. She also realized that only way to dislodge the mighty British Empire in India so was to create mass awakening and frighten the Britishers working in India by violent actions. The brutal and tyrannical behavior of British officers and judges further created pathological hatred for the Raj in her psyche. Therefore, she decided to kill some British VIP so that his murder at her hands could send shock waves right upto Britain. This action would serve three national purposes i.e. mass awakening, terror in the minds of British officials and that Raj would realize that even girls of India have taken up guns in their hands and the time had come for them to leave the shores. She also felt that Raj understood the language of the pistols only and not that of Civil Disobedience Movement. Many young boys like Khudiram Bose and Gopinath Saha had already killed some tyrant police officers and Bina wanted to join their ranks. Late Lokmanya Tilak used to write in his two weeklies Kesari and Marhatta that brute and tyrannical conduct of Britishers was responsible for the birth of revolutionary organizations in the country.

Pregnant with such revolutionary ideas at this young age of 21years, Bina, one day, went to meet Kamla Das and outpoured her feelings before her and narrated her determination to shoot Stanley Jackson, the Goveror of Bengal who was arriving in the Senate Hall of Calcutta University on the occasion of the Annual function on 6th February 1932. Kamla Das was shocked to hear such daring plan from young Bina. Kamla explained to Bina the pitfalls of this daring action in details. She told her that there was no chance to escape from the hall and she would be arrested immediately and tortured to give the names of those who had abetted her in that crime besides the names and hideouts of other revolutionaries whom she knew and final denouement would be her hanging at the gallows. Bina replied that an ampule of potassium cyanide was the best alternative to avoid other possibilities. Finally Bina begged for a pistol and an ampule of potassium cyanide to fulfill her objective. Finding Bina recalcitrant in her determination, Kamla procured a 5-bore Belgium made pistol worth Rs.280 for her and taught her how to use it. One hour training was not enough to make Bina an expert in the use of the pistol. An ampule of the cyanide was also arranged.

Governor Jackson arrived in the Senate Hall at the appointed time around 1I am. Bina too entered the Hall carrying the pistol in her left pocket and cyanide ampule in the right under the cover of the the gown required to be worn to receive the degree. Security checks were not so taxing at the gate as nobody thought that University girls would carry arms to shoot the Governor. Only once two girls had shot down a British officer in Comilla, now in Bangladesh. The Governor got up to read his address after the Vice-chancellor Hasan Suhrawardy had read the welcome address. He had hardly spoken few sentences when Bina too got up and started proceeding towards the Governor. Initially, the Governor thought that she had got up to speak some kind of her troubling grievance. But he soon realized that she was carrying a pistol when Bina put her hand in her left pocket. The Governor became alert. He had been a good test cricketer in England and knew how to ward off the rising fast deliveries. Bina took out the pistol quickly and fired at the Governor twice. The Governor ducked both times and remained unhurt. In the meantime, the Vice-chancellor came down and overpowered Bina physically. Still she fired two shots more but could not shoot at the Governor. The Vice-chancellor also did not allow her to consume the poison.

Accordingly, Bina was arrested and taken to the nearest police station for interrogation. Her parents also came there. The police inspector told the parents that Bina could be released if she gave the names of her associates taking part in the dastardly crime. But Bina did not divulge any name and bore all the torture techniques stoically. However Kamla Das was arrested on the basis of suspicion. Both the girls admitted their guilt quickly without any demur. They made moving written statements before the judge saying that they had nothing personal against the Governor or any member of his family and planned to kill him because he was the representative of the Empire that was robbing and plundering the wealth of India in every possible way and thus perpetuating dehumanising poverty for good. The trial hardly ran for a week as the girls had plainly admitted their guilt. Accordingly, Bina was awarded a rigorous imprisonment of nine years and Kamla for seven years. Bina was released after seven years in 1939 at the intervention of Gandhi Ji. She again went to jail in 1942 after she took part in the Quit India Movement and released in June 1945. She remained a member of the Bengal Assembly for two terms and married another revolutionary. She died in Rishikesh in 1986 at the age of 75.

Martyrdom of Sushil Sen

Sushil Sen was born in Shilong in 1892. His father Kailash Chandra Sen was a head-clerk at the office of IG (Inspector General) Prison Shilong. Sushil was a promising boy at the Government High School in Shilong, always securing a top position in the class examinations. He had developed partriotic feelings right from his childhood and in 1905, he joined a secret society run by Gyanendranath Dhar at Sylhet to receive macho-training in boxing and stick fighting. Nationalism and violence were in the air after the bifurcation of Bengal by the die-hard Viceroy Lord Curzon in October 1905. Top leadership of Bengal led by Bipinchandra Pal had come at the forefront of the national movement against the bifurcation. The leaders were busy delivering inspiring speeches at different places that stoked nationalistic fervour among the youths. Inspired by such speeches, Sushil decided to start his graduation studies at Calcutta that was the nerve centre of all political and revolutionary activities. He joined the National College where revolutionary Aurobindo Ghosh was the Principal.

D.H.Kingsford(ICS) was the Chief Presidency Magistrate in the Lalbazar Court at Calcutta in,1906. He was notorious for punishing the people very harshly who took part in the Movement or even indirectly associated with it. He used to order rigorous imprisonments along with flogging and was nicknamed as the Kasai-Kaji. Bhupendranath Dutta (younger brother of Swami Vivekananda) had written two articles in a newspaper Juganter that were deemed as seditious in nature and he was sentenced to one year rigorous imprisonment in July 1907 by Kingsford. Likewise Aurobindo Ghosh, editor of Bande Matram wàs being tried in the same court for publishing articles of explosive nature that could stimulate revolutionary or anti-British feelings in the young minds. Large number of students used to gather outside the court on the day of hearing of Bande Matram case and shout slogans. The police was instructed to shoe away the boys by the use of Lathi Charge if the gathering swelled into a large crowd. On one hearing in August 1907, the police inspector Hue started beating Sushil Kumar Sen who too retaliated by giving blows on the face of the inspector. He was caught, dragged and produced before the judge Kingsford who ordered under age Sushil to be canned 15 times. The inspector took him to the police station and caned him exactly 15 times with utmost severity and the boy cried Bande Matram each time.

Sushil became a known figure in the college and adjoining localities after the canning episode. He was also honoured by a student's body. Soon he came in contact with the revolutionary group, known as Jugantar, controlled by Aurobindo Ghosh and his younger brother Biran Ghosh. Kingsford was breaking records of cruelty while punishing the Satyagrahis of Bengal. Biran decided to assasnate the judge at the earliest as he was going to join his new place of posting at Mujjaffarpur in Bihar. A plot was hatched to place a bomb or an IED(an improvised explosive device) inside a book and send the same to his residence as a aesthetically wrapped gift because Kingsford was known to be very fond of reading new books on his favourite subject of Law.

Hemchandra Das, a member of the group, had learnt the art of manufacturing bombs or IED in France from Russian revolutionaries and had brought a translated manual for making the bomb. So Hemchandra Das prepared an IED using picric acid and a salt of mercury. Barin purchased a thick book on Law running into 1100 pages. Hemchandra took out 600 pages of the book and kept the IED in its place with a tin cover attached with a triggering device such that once the book is opened for reading, the trigger activated the IED to cause the explosion. The book was wrapped in nice catchy paper cover. Paresh Mullick took the parcel to the residence of Kingsford and handed over the gift to the guard. Treating it as one more farewell gift, the guard sent the gift inside. The gift was placed in a big box where other gifts were also placed. The judge was busy in making the shifting arrangements to his new place of posting and did not take any notice of the gifts. The gift containing the bomb too was carried along with the luggage and placed in a store in the new residence at Mujjaffarpur and kept lying for a year and few months.

The revolutionary group waited for the good news of explosion of the IED for few months. Thereafter, they could sense that the gift has not been opened and must be lying unattended in some corner in the new building. Accordingly, they decided to kill the judge by hurling a bomb at his car once he came out of his house in that car. This daunting task was given to Profull Chakki and Sushil Sen. They surveyed the residence of the judge and his movements few days before the assassination attempt, Instantly, Sushil got the news that his father was on the death bed and had expressed the desire to see him at the last moment. Sushil told that he would go only after the job of assassination was accomplished. But his associates compelled him to see his dying father immediately and the task of throwing the bomb was given to another youngman Khudiram Bose. Finally, both Khudiram Bose and Chakki went to the judge's residence at Mujaffarpur in April 1908 in the evening. A car came out of the residence. Bose and Chakki felt that the judge was sitting on the rear seat and they threw the bomb on the car. Providence again saved the judge as two ladies and not Kingsford were going out in the car. Both of them died on the spot. Bose was arrested by the police and finally hanged to death. He uttered Bande Matram smilingly when taken to the gallows. Chakki had an ampule of cyanide, took it and died on the spot.

The police launched a massive hunt for other revolutionay groups who were part of the conspiracy and raided their hide outs. 49 youths were arrested including Aurobindo Ghosh and his brother Biren Ghosh. During torturous interrogation, one youngman broke down and revealed about the iinvolvement of Sushil Sen in placing the bomb at the residence of Kingsford. Accordingly, the bomb was discovered and diffused by an army squade. The diffused bomb is still preserved in the Police Museum at police H/Q Calcutta. Sushil Sen too was arrested. The trial for the famously known Alipore Conspiracy Case continued for 21 months. 29 youths were acquitted for want of proof. They included Aurobindo Ghosh. Biran Ghosh and Ulhas Dutta were sentenced to death that was converted into life imprisonment by the High Court Others were sentenced to imprisonments of varying duration.

Aurobindo Ghose informed that he had had divinely revelations during the jail and left the revolutionary activities and went to Pondicherry for good and set up an Ashram that became very famous later on and has now become a centre of pilgrimage.

The heroic story of Sushil Sen does not end even here. At the sane advice of Aurobindo Ghosh, he took admission in the Presidency College and pursued his studies for the BSc course and stood first in Chemistry pper in the final exam of the University. But Sushil could not withhold his revolutionary urge anymore and joined another revolutionary group. His job was to create resources. He had arranged Rs.10000 to facilitate the escape of Rashbihari Bose to Japani after he had thrown a bomb on Lord Harding in a procession in Chandani Chowk Delhi. He was also involved in the murder of pro-British Inspector Sachinder Mukerji in Feb 1915.

In April the same year, he was given the task of committing a dacoity in village Pragpur in Nadia district as the money was badly needed for running the organisation and purchase of arms. He reached the village on 30th April 1915 along with five colleagues by boat along river Ganges. The group succeeded in committing the robbery and decamped with the booty consisting of Rs. 7000 and some jewellery. They were chased by the villagers and finally took over by the police. Sen was fired and got bullets in both the legs. The group decided to have an encounter with the police and go down as martyres in the history after killing as many policemen as possible. Sen disuaded them to do so and asked them to kill him and cut own his body to pieces and burry the parts at different places (to block the investigations of the police) and then escape to safety. They did not agree to this plan initially but Sen prevailed upon them to do as he wished as their lives were needed for bigger tasks of performing revolutionary duties. Finally, they agreed and did as Sen had desired. This is how the life story of this brave young man ends after living for just 23 years on this land. The culprits of robbery were traced next year and 13 young boys were arrested in 1916. Three accused were expatriated for 17 years and the fourth accused was deported with a rigorous imprisonment of eight years and sent to the Andaman jail.. The rest were acquitted.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 26.04.94) 28/5'5" B.Sc. Math, M.Sc. Math from Delhi University, B.Ed. Pursuing PhD. (Math) from PEC Chandigarh. Father Pharmacist at CGHS, Delhi. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalai, Gulia, Malik. Cont.: 7015953425.
- SM4 Jat Girl (DOB 06.06.94) 28/5'7" B.Com, B.Ed. Father retired from L,z Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Kadyan, Antil, Sangwan. Cont.: 9888333315, 9877533194
- SM4 Jat Girl (DOB 26.03.96) 26/5'4" Degree in Computer Engineering. Residing in Canada. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra. Cont.: 9915805679.
- SM4 Jat Girl (DOB 05.07.97) 25/5'3" B.Tech. (CCE). Working as Software Engineer in reputed Sales Force MNC with Rs. 22 lakh PA. Father's own business. Mother housewife. Family settled in own house at Kurukshetra. Mother housewife. Avoid Gotras: Nain, Anttal. Cont.: 9416112949.
- SM4 Jat Girl (DOB 26.11.99) 23/5'3" MA Psychology. Pursuing P.G. Diploma in Guidance & Counseling. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Lather, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138,
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95) 27/5'2" MSc. (Math). B Ed. HTET TOT. CETqualified. Father Superintendent in Haryana Government. Preferred Tri-city match, Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Beniwal, Dhillon, Nehra. Cont.: 9466442048, 7888544632
- SM4 Jat Girl (DOB 20.11.99) 23/5'3" B.A,. Working as Clerk (Contractual) in Government Department Panchkula. Avoid Gotras: Ravish, Kundu, Lamba. Cont.: 9467588051, 9417869505
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09.94) 28/5'6" B.A, B.Ed., MA (History), NTT-2021, CTET, PRT-2021 qualified. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817.
- SM4 Jat Girl (DOB 03.05.96) 26/5'6" B.Com., Father retired from Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Malik, Nandal. Cont.: 8054519003.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.95) 27/5'5" B.Sc. Nursing, MA Public Administration. Working in PGI Chandigarh as Nursing Officer. Brother working in Reliance Company Cyber Security Eng. Office in Pune. Father retired from Haryana Government service. Family settled at Chandigarh. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.05.90) 32/5'2" M.Tech. Teacher of Korean language at Gurugram. Avoid Gotras: Chahal, Chhillar, Ahlawat. Cont.: 9896202802, 9953171017.
- SM4 Jat Girl (DOB 14.03.96) 26/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, CTET, Pursuing Ph.D in Physics. NET, JRF passed. Father retired SDO Agriculture. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082.
- SM4 Jat Girl (DOB 25.06.98) 24/5'3" B. Com, M.Com. Pursuing PhD. In Commerce (Finance) from a reputed University. Remained NCC Candidate and attained rank of U/o and qualified B & C certificates with A Grade. Father Professor in a State University. Mother well educated housewife. Army background family. Family settled at Kurukshetra. Avoid Gotras:Taxak (Tokas), Sulkh, Dhankad. Cont.: 9416782444.
- SM4 Jat Girl 26/5'11" MA, B.Ed. Employed as teacher in private school at Panchkula. Father Ex-service man. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Dalal, Kadiyan. Cont.: 8054064580
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 29/5'4" B.Tech. (Electrical & Communication). Employed in Bel. Company on contract basis. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 02.09.90) 32/5'5". MBA in International Business from University Business School, P.U. Chandigarh. Employed as Deputy Collector in Irrigation Department in Head Office Panchkula. Avoid Gotras: Kadyan, Hooda. Cont.: 9468269712
- SM4 Jat Girl (DOB 1988) 34/5'3". MA (Economics Hons.), PhD. (Economics), NET/EILETS cleared. Employed in Niti Aayog New Delhi. Father class-II officer retired from Haryana Govt. Brother married and settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040
- SM4 Jat Girl (DOB 03.10.97) 24/5'3". BDS from JCD Vidyapeeth Sirsa. Doing job in Dental Clinic, Julana. Avoid Gotras: Sehrawat, Redhu, Rose: Cont.: 9463188162
- SM4 Jat Girl (DOB 08.12.92) 31/5'2" B. A. (Arts.), M.A. (Hindi), HTET, CTET, PTET, PGDCA from Hartron. Employed as Data Entry Operator in Town & Country Planning Department on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Shehrawat, Maan. Cont.: 9417097248
- SM4 Jat Girl (DOB 19.12.95) 26/5'3" B.Tech. (Mechanical Engineering). Working as Senior Engineer in MNC Gurugram with Rs. 7 lakh package PA. Avoid Gotras:Dhankhar, Hooda, Nandal. Cont.: 9465529776
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 30/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Government Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Family settled at Pinjore. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras:Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 04.06.94) 28/6 feet. B.Tech. (Mechanical). Employed as P.O. in Union Bank Chandigarh. Father retired Hony. Captain from Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Panwar. Cont.: 9717612698.
- SM4 Jat Boy (DOB 16.07.82) 40/5'9" B.P.E.D. Working as Sports Teacher in private school, Sonepat. Avoid Gotras: Dahiya, Dhankhar. Cont.: 8607150300, 9988853313.
- SM4 Jat Boy (DOB 17.02.95) 27/6 feet. B.Tech. (IT Engineer) from Maharaja Surajmal Institute of Technology, New Delhi. Working as Govt. Teacher k.,.7 (Computer Science TGT) in Delhi. Income approx. 11 lakh PA. Father's business in Real Estate, in Delhi.

Mother housewife. Family settled at Delhi. Preference Delhi NCR only. Avoid Gotras: Ahlawat, Ghanghas, Sheoran. Cont.: 9312080645.

- SM4 Jat Boy (DOB 04.10.95) 27/5'8" B.Tech., MBA. Employed in Hyderabad with package of above Rs. 20.5 lakh PA. Family settled in Panckula. Parents retired pensioners. Avoid Gotras: Sindhu, Rathi, Sharai, Dalal. Cont.: 9872793675
- SM4 Jat Boy (DOB 11.10.98) 24/5'7" Employed as Probationary Officer in SBI. Avoid Gotras: Grewal, Chahal, Dhankhar. Cont.: 9416761353
- SM4 Jat Boy (DOB 10.10.94) 28/5'11" B.Tech. from CJU Hisar. PGDCA, MBA (IT & HR) Employed as Team Leader in Infosis Mohali Father Advocate at Jind. Mother teacher retired. Avoid Gotras: Malik. Sheoran. SindfiL. Cont.: 9812157267
- SM4 Jat Boy (DOB 08.06.98) 24/5'11" B.A, LLB (Horns.) LLM (Criminal). Pursing P.G. diploma in forensic science. Working as Advocate. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Laher, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138
- SM4 Jat Boy (DOB 10.05.96) 26/6'1". MBA. (Finance & Marketing). Working in HDFC Bank Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Saroha, Malik, Sehrawat. Cont.: 9463384601
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 29/6 feet. B.Tech. Employed as Assistant Manager in Jai Parvati Forge Limited. Near Derabassi (Punjab). Annual income Rs. 62 lakh PA and five acre agriculture land. Father retired from Government job. Mother housewife. Family settled in own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Kadyan. Cont.: 9876602035, 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 27. 04. 89) 33/5'10" B. Tech in Bio-Medical Engineering. Currently working in a reputed Masters' Medical Company with package Rs. 27 lac PA. Father's own business of Medical equipments. Mother housewife. Avoid Gotras: Jattain, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.
- SM4 Jat Boy (DOB Jan. 89) 33/6'1" BA, PGDCA and diploma in Computer Science. Working in private school. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Chahal, Malik, Ghanghas. Cont.: 9896840403.
- SM4 Jat Boy (DOB Feb. 82) 40/5'7" B. Com., Computer Diploma. Employed as Assistant in Health Department Haryana at Panchkula. Father retired. Mother no more. One elder brother and two elder sisters married and settled in Panchkula, Chandigarh and USA. Family home in Panchkula. Avoid Gotras: Rathee, Kadyan, Balhara. Cont.: 16315201440, 9463087684.
- SM4 Jat Boy (DOB 20.11.96) 26/5'7" B.A. Working as Stenographer on regular basis in Haryana government Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9315428491
- SM4 Jat Boy (DOB 15.02.89) 33/6'2" M.A. English from Punjab University. Employed in District Court Mohali as (Almad) Clerk on regular basis. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Boy (DOB 21.06.94) 28/5'9" Employed as Major in Indian Army after NDA. Father A.S.I. in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Dahiya, Hooda, Dalal. Cont.: 9417506076.
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 26/6'2" Captain in Army. BSC Chemistry from NDA. B. Tech. from CME in Pune. Father's own business of Transport at Chandigarh and Nagpur. Mother housewife. Only child. Avoid Gotras: Dhull, Nehra, Sheoran. Cont.: 9878705529.
- SM4 Jat Boy (DOB 19.03.92) 30/6 feet. B. Tech Mechanical Engineering. Diploma in Sound Engineering. BTEEC Certificate in Music Technology from Point Blank Music School London. Currently working: free lancing. Avoid Gotras: Kajal, Khatkhar, Khatri. Cont.: 9466954276.
- SM4 Widower with two kids Australian Citizen Jat Boy. Age 44 years. B. Tech., Pilot. Well settled in Melbourne, Own multiple business. Parents settled at Panchkula. Avoid Gotras: Nain, Solanki, Dalal. Cont.: 61401377715, 9872044466
- SM4 Jat Boy 29/5'10" B. Tech. CSE. Working in I.T. Company at Chandigarh. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Dalal, Kadiyan. Cont.: 8054064580
- SM4 Jat Boy (DOB 12.06.95) 27/5'5" B. Tech. (Urban & Regional Planning) & M. Plan (Master in Urban Planning) both from Guru Nanak Dev University Amritsar. Employed as Assistant Town Planner (ATP) on contractual basis in Govt. office Haryana. Father Haryana Govt. employee at Chandigarh. Mother working in a reputed private school at Chandigarh. One younger brother (Transport Planner) working as Senior Project Scientist at IIT Delhi. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Bilam, Pannu, Malik. Cont.: 9417838725.
- SM4 Jat Boy (DOB 1986) 36/5'11" L.L.B. & L.L.M. from Kurukshetra University, Ph.D. from Punjab University Chandigarh. Own well established business in Bhiwani. Both parents retired from Government service. Avoid Gotras: Sangwan, Nehra, Legha. Cont.: 9888911945
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" BA, LLB from Punjab University Chandigarh. Father HAS class-II (Rtd.). Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab), Hotel/Show Room/ Income/crore/year. Agriculture land and own house at village. Avoid Gotras: Balyan, Deswal, Pannu. Cont.: 9216886705
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 24/6 Feet. B. Tech. (Computer Science), MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software, Pune with package of Rs. 16 lakh+ PA. Father retired as Supervisor from HMT Ltd. Pinjore. Mother housewife. Family Business Coaching Institute at Pinjore (Haryana) with Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 17.10.89) 32/6 Feet. B. Tech. (Computer Science). Employed as Inspector (GST & Central excise) at GST & Excise Commissionerate Surat (Gujrat), Ministry of Finance, Govt. of India with Rs. 80,000 P.M. .Father retired Superintendent. Mother housewife. Area preferred Panchkula, Chandigarh. Yamuna Nagar, Kurukshetra, Karnal, Hisar. Avoid Gotras: Malik, Jattan, Punia. Cont.: 9996858234
- SM4 Jat Boy (DOB 17. 08. 95) 26/6'1" B. Tech. (CSE). Working as Software Engineer in MNC at Pune with Rs. 15 lakh PA. Father Officer in Agriculture Department Haryana. Family settled in own house at Kurukshetra. Avoid Gotras: Tomar, Teotia. Cont.: 9466262234.

We Are Proud of our Worthy President, Ex Major Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.) Former D.G.P. Haryana

On Vijay Divas 16th December, we salute our great warrior of 1971 Indo-Pak War Ex-Major Dr. M. S. Malik for his gallant actions on Jessore-Khulna Sector now in Bangladesh for carrying out successful commando operations along with the co-called Mukti Vahini, the then deserters of Pakistan Army known as East Bengal Rifles behind the enemy lines during the then declared War w.e.f. 04th December, 1971 and at the time of surrender of 35000 troops of Pak force i.e. POWS on the bank of Padma river at Khulna on 16th December, 1971 during surrender process and afterwards as Escort Commander escorting them up to POWS camps near Fort William i.e. H.Q.s of Eastern Command Kolkata. Brief facts are as under:

Ex-Major Dr. M. S. Malik was with Major General Dalbir Singh on 16th December, 1971 at Khulna Port on Padma River-Khulna GOC 9 Div Khulna-Axis just standing by his side as Mukti Vahini Coy Commander & GOC 9 Division gave his last "OP Order" directing his counter part of PAK Army Brig. Hyat Khan to surrender where upon 35000 Pak troops surrendered on 17th December, 1971 & the process was completed in 8/10 hours. He was deputed as escort's Commander on popular demand from POWS due to Safety as Malik was considered to be Muslim by Pak Troops. Hence, on December 17th 1971, he escorted all Pows (35000) inclusive of Brig. Hyat Khan from Khulna to Pows Camps near Fort Milliam Kolkatta, HQs Eastern Command of Indian Army. Ex. Major Dr. M. S. Malik also displayed rarest of the rare bravery of commanding a Coy of Mukti Vahinies and for carrying out successful command operations behind enemy lines in Jessore-Khulna Sector much before the start of war and also carried out front attacks along with 9 Div. Troops of army after 04th December, 1971 i.e. after declaration of war.

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन :

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।